11th ANNIVERSARY

त्रिपुरी टाइम्स

www.tripuritimes.com

वर्ष 11 अंक 115

जबलपुर, शनिवार 23 मई 2026

पृष्ठ संख्या : 8 मूल्य : 2 रुपए

भारत-साइप्रस संबंध बने रणनीतिक साझेदारी निवेश दोगुना करने का लक्ष्य : प्रधानमंत्री मोदी

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और साइप्रस के बीच द्विपक्षीय संबंधों को एक नए ऐतिहासिक मोड़ पर ले जाते हुए दोनों देशों ने इन्हें अब रणनीतिक साझेदारी का दर्जा प्रदान कर दिया है। इस निर्णय के साथ ही दोनों देशों ने आर्थिक सहयोग, निवेश विस्तार, वैश्विक चुनौतियों और अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में सुधार जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर एकजुट होकर आगे बढ़ने का संकल्प लिया है। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने साइप्रस के राष्ट्रपति निकोस क्रिस्टोडौलाइड्स के साथ शुक्रवार को हुई उच्चस्तरीय द्विपक्षीय वार्ता के बाद संयुक्त प्रेस वक्तव्य में कहा कि भारत और साइप्रस के संबंध केवल कूटनीतिक औपचारिकता तक सीमित नहीं हैं, बल्कि ये लोकतंत्र, कानून के शासन, आपसी विश्वास और साझा मूल्यों पर आधारित मजबूत एवं भविष्य-दृष्टि वाले संबंध हैं। उन्होंने कहा कि यही आधार दोनों देशों की रणनीतिक साझेदारी को और अधिक सशक्त बनाएगा। प्रधानमंत्री मोदी ने बताया कि पिछले एक दशक में साइप्रस से भारत में होने वाला निवेश लगभग दोगुना हो चुका है और अब दोनों देशों ने अगले पाँच वर्षों में इसे एक बार फिर दोगुना करने का महत्वाकांक्षी

लक्ष्य निर्धारित किया है। उन्होंने कहा कि भारत में तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था, निवेश अनुकूल नीतियाँ और वैश्विक साझेदारी के अवसर इस लक्ष्य को हासिल करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। श्री मोदी ने यह भी कहा कि भारत-यूरोपीय संघ मुक्त व्यापार समझौते से दोनों देशों के बीच व्यापार और निवेश के नए द्वार खुलेंगे, जिससे उद्योग, सेवा क्षेत्र और तकनीकी सहयोग को नई गति मिलेगी। प्रधानमंत्री ने वैश्विक परिस्थितियों पर भी विस्तार से चर्चा करते हुए कहा कि आज दुनिया कई प्रकार की चुनौतियों से गुजर रही है, जिनके समाधान के लिए अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं में सुधार अत्यंत आवश्यक है। उन्होंने यूक्रेन और पश्चिम एशिया में चल रहे संघर्षों का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत और साइप्रस दोनों ही शांति, स्थिरता और कूटनीतिक समाधान के पक्षधर हैं तथा संघर्षों की शीघ्र समाप्ति के प्रयासों का समर्थन करते रहेंगे। उन्होंने कहा कि लोकतंत्र और मानवता के हित में यह आवश्यक है कि वैश्विक संस्थाएं अधिक प्रभावी, पारदर्शी और समावेशी बनें ताकि विकासशील देशों की आवाज को भी उचित स्थान मिल सके। इस अवसर पर दोनों देशों ने विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने, निवेश को प्रोत्साहित करने और आपसी संबंधों को नई ऊंचाइयों तक ले जाने पर सहमति जताई। यह साझेदारी आने वाले वर्षों में भारत और साइप्रस के बीच संबंधों को और अधिक मजबूत और परिणामोन्मुखी बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

कोलकाता की मस्जिदों में अब दो शिफ्टों में होगी जुमे की नमाज

कोलकाता , एजेंसी। पश्चिम बंगाल में नवनिर्वाचित भारतीय जनता पार्टी सरकार द्वारा धार्मिक आयोजनों के दौरान सड़कों को खाली रखने और सुचारू यातायात सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए हैं। इसी क्रम में, कोलकाता की प्रमुख मस्जिदों ने एक बड़ा फैसला लेते हुए शुक्रवार से जुमे की नमाज़ दो अलग-अलग पारियों (शिफ्टों) में आयोजित करने की व्यवस्था शुरू की है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सभी नमाज़ी मस्जिद परिसर के भीतर ही नमाज़ अदा कर सकें और भीड़ सड़कों पर न आए। मस्जिद कमेटियों के अनुसार, शुक्रवार की नमाज़ के दौरान भीड़ प्रबंधन के लिए स्थानीय पुलिस थानों और समुदाय के लोगों के साथ समन्वय स्थापित कर आवश्यक इंतजाम किए गए हैं। हालांकि, इस संबंध में सरकार की ओर से कोई आधिकारिक अधिसूचना या लिखित आदेश जारी नहीं किया गया है, लेकिन कई मस्जिद समितियों का कहना है कि स्थानीय पुलिस थानों ने मौखिक रूप से यह अनुरोध किया था कि नमाज़ के समय मुख्य सड़कों और चौराहों पर जाम की स्थिति न बने। कोलकाता की प्रसिद्ध नाखोदा मस्जिद के ट्रस्टी नासिर इब्राहिम ने बताया, सड़कों पर भीड़ जमा होने से रोकने के लिए हमने जुमे की नमाज़ को दो जमातों में बांटने का फैसला किया है। पहली नमाज़ दोपहर 12:15 बजे और दूसरी दोपहर 1:30 बजे होगी। इसी तरह राजाबाज़ार, नारकेलडांगा, रॉयड स्ट्रीट, बेनियापुकुर, खिदिरपुर, मोमिनपुर, तपसिया और पार्क सर्कस जैसे मुस्लिम बहुल इलाकों की मस्जिदों में भी यह व्यवस्था लागू की जा रही है। राजाबाज़ार जामा मस्जिद में भी दो पारियों में नमाज़ होगी। सिटिजन फोरम फॉर सोशल जस्टिस के संयोजक उमर ओवैस ने कहा कि इस फैसले से लोग बिना किसी परेशानी के मस्जिद के अंदर नमाज़ पढ़ सकेंगे। इसके अलावा, हावड़ा के शिबपुर जामा मस्जिद के इमाम मौलाना राशिद अहमद ने भी इस व्यवस्था की पुष्टि करते हुए सहयोग की अपील की है। पिछले शुक्रवार को भी कई नमाज़ियों ने मस्जिद भरने पर स्वेच्छा से दूसरी मस्जिदों का रुख किया था, जिससे यातायात पूरी तरह सामान्य रहा था।

जल्द खत्म हो जाएगा पेट्रोल-डीजल एलपीजी के लिए मचेगा हाहाकार!

बाबा वेंगा की डरा रही है भविष्यवाणी

नई दिल्ली, एजेंसी। इस वक्त पूरा विश्व बड़े ऊर्जा संकट से जूझ रहा है। रूस-यूक्रेन युद्ध के कारण पहले से ही वैश्विक अर्थव्यवस्था अस्त-व्यस्त थी, और अब अमेरिका व ईरान के बीच बढ़ता तनाव इस संकट को और गहरा कर रहा है। भू-राजनीतिक तनाव के इस माहौल के बीच, बुल्गारिया की भविष्यवक्ता बाबा वेंगा की एक कथित भविष्यवाणी इन दिनों सोशल मीडिया पर खूब वायरल हो रही है, जिसने आम जनमानस की चिंताओं को बढ़ा दिया है। अतीत में उनकी कई भविष्यवाणियों के सच होने के दावों के कारण लोग इस नई चेतावनी को लेकर भी आशंकित हैं। इंटरनेट पर चल रहे दावों के अनुसार, बाबा वेंगा ने वर्ष 2026 के लिए एक बड़ी चेतावनी दी थी, जिसके मुताबिक दुनिया को एक भीषण ऊर्जा संकट का सामना करना पड़ेगा। इस दौरान पेट्रोल और डीजल की आपूर्ति में अत्यधिक कमी आने की बात कही गई है। वर्तमान परिस्थितियों को देखें तो कच्चे तेल की बढ़ती कीमतें और होर्मुज स्ट्रेट के बंद होने की आशंका इस डर को और पुख्ता कर रही है। विशेषज्ञों का मानना है कि यदि यह रणनीतिक जलमार्ग बाधित होता है, तो यातायात के साधनों में ठहराव आ सकता है। इस संकट का असर केवल ईंधन तक सीमित नहीं है,

बल्कि एलपीजी और सीएनजी की कीमतों में भी भारी उछाल देखने को मिल रहा है। इसका सीधा असर आम आदमी की रसोई के बजट पर पड़ रहा है। कई देशों में डीजल के लिए वाहनों की लंबी कतारें लगी हैं, वहीं ढाबों और होटलों में जरूरत के मुताबिक गैस सिलेंडर न मिलने से मुश्किलें बढ़ गई हैं। विश्लेषकों का कहना है कि जब तक ईरान-अमेरिका संघर्ष पर विराम नहीं लगता, तब तक वैश्विक सप्लाई चेन का सामान्य होना मुश्किल है। हालांकि, बाबा वेंगा की इन भविष्यवाणियों की कोई आधिकारिक पुष्टि नहीं है, लेकिन वर्तमान भू-राजनीतिक स्थितियां इस संकट को हकीकत में बदलती हुई दिखा रही हैं।

हाईवे पर कैमरे लगाए, फिर सेना के मूवमेंट के फुटेज भेजे पाकिस्तान

जासूसी का नया तरीका आरोपी गिरफ्तार

पठानकोट, एजेंसी। पंजाब के सीमावर्ती जिले पठानकोट में सुरक्षा एजेंसियों ने एक बड़े पाकिस्तान समर्थित डिजिटल जासूसी रैकेट का भंडाफोड़ करते हुए एक स्थानीय व्यक्ति को गिरफ्तार किया है। इस मामले के सामने आने के बाद सुरक्षा तंत्र में हड़कंप मच गया है, क्योंकि इस बार जासूसी के लिए किसी सैन्य परिसर में घुसपैठ की जगह राष्ट्रीय राजमार्ग पर लगे एक साधारण इंटरनेट आधारित सीसीटीवी कैमरे का इस्तेमाल किया गया था। पुलिस ने आरोपी के पास से कैमरा और उससे जुड़े उपकरण भी बरामद कर लिए हैं। पकड़े गए आरोपी की पहचान पठानकोट जिले के चक्क धारीवाल गांव के रहने वाले बलजीत सिंह के रूप में हुई है। आरोपी ने पठानकोट-जम्मू मार्ग (एनएच-44) पर

एक पुल के पास रणनीतिक रूप से यह कैमरा लगाया था। यह वही रूट है जहां से भारतीय सेना और अर्धसैनिक बलों के काफिले नियमित रूप से जम्मू-कश्मीर के लिए आते-जाते हैं। जांचकर्ताओं के अनुसार, इस कैमरे को इस तरह सेट किया गया था कि वहां से गुजरने वाले सैन्य वाहनों और सुरक्षाबलों की आवाजाही की लाइव फुटेज सीधे इंटरनेट के जरिए पाकिस्तान में बैठे हैंडलरों तक पहुंच रही थी। प्रारंभिक जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी को दुबई में बैठे एक संदिग्ध व्यक्ति से निर्देश मिल रहे थे, जिसने इस काम के लिए उसे लगभग 40 हजार रुपये का भुगतान भी किया था। पुलिस की शुरुआती पूछताछ में आरोपी बलजीत सिंह ने स्वीकार किया है कि उसने इसी साल जनवरी के महीने में यह कैमरा लगाया था और इसकी लाइव फीड बाहरी तत्वों के साथ साझा कर रहा था। वर्तमान में जांच एजेंसियां आरोपी के मोबाइल रिकॉर्ड, बैंक खातों के लेन-देन और उसके विदेशी संपर्कों को खंगाल रही हैं, ताकि इस नेटवर्क से जुड़े अन्य चेहरों और कम्यूनिकेशन सिस्टम का पता लगाया जा सके। यह मामला सुरक्षा एजेंसियों के लिए इसलिए भी बड़ी चुनौती बन गया है क्योंकि बाजार में आसानी से मिलने वाले डिजिटल उपकरणों, जैसे वाई-फाई कैमरे और मोबाइल ऐप, का उपयोग अब खुफिया जानकारी जुटाने के लिए एक सस्ते और प्रभावी हथियार के रूप में किया जा रहा है। पठानकोट हमेशा से ही देश के सबसे संवेदनशील सैन्य क्षेत्रों में शामिल रहा है, क्योंकि इसकी सीमाएं पाकिस्तान और जम्मू-कश्मीर के बेहद करीब हैं। साल 2016 में यहां के एयरफोर्स स्टेशन पर हुए बड़े आतंकवादी हमले के बाद से ही पूरा इलाका हाई अलर्ट पर रहता है। ऐसे में हाईवे पर सुरक्षाबलों की लाइव निगरानी का यह मामला डिजिटल जासूसी के एक नए और खतरनाक दौर की ओर इशारा करता है।

यूरेनियम भंडार पर सुप्रीम लीडर के फैसले पर भड़के ट्रंप

ईरान और अमेरिका में बढ़ेगा तनाव

वॉशिंगटन, एजेंसी। ईरान और अमेरिका के बीच तनाव एक बार फिर खतरनाक मोड़ पर पहुंचता दिख रहा है। युद्धविराम जैसे हालात बनने के बावजूद दोनों देशों के बीच अविश्वास इतना गहरा है कि किसी भी वक्त जंग दोबारा भड़क सकती है। हाल ही में ईरान के सुप्रीम लीडर अयातुल्ला मोजतबा खामेनेई के एक बड़े फैसले ने अमेरिकी प्रशासन की चिंता बढ़ा दी है। सूत्रों के मुताबिक, खामेनेई ने साफ निर्देश दिया है कि ईरान अपने लगभग वेपन-ग्रेड यूरेनियम का भंडार देश से बाहर नहीं भेजेगा। यह मुद्दा अमेरिका और इजरायल की सबसे बड़ी मांगों में शामिल रहा है। ईरानी अधिकारियों के अनुसार, सुप्रीम लीडर का मानना है कि यदि यूरेनियम बाहर भेज दिया गया, तो भविष्य में अमेरिका और इजरायल के किसी नए हमले की स्थिति में ईरान कमजोर पड़ जाएगा। इसी वजह से तेहरान अब अपने परमाणु भंडार को देश के भीतर ही सुरक्षित रखना चाहता है। उधर, अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने साफ कर दिया है कि अमेरिका ईरान को उच्च संवर्धित यूरेनियम रखने नहीं देगा। ट्रंप ने कहा कि संभव है कि अमेरिका उसे नष्ट कर दे, जिससे साफ है कि वॉशिंगटन इस मुद्दे पर पीछे हटने को तैयार नहीं है। इस विवाद में इजरायल भी लगातार दबाव बना रहा है। इजरायली नेतृत्व का कहना है कि जब तक ईरान अपना संवर्धित यूरेनियम बाहर नहीं भेजता, प्रॉक्सी मिलिशिया का समर्थन बंद नहीं करता और बैलिस्टिक मिसाइल कार्यक्रम खत्म नहीं करता, तब तक जंग को खत्म नहीं माना जाएगा। पश्चिमी देशों का आरोप है कि ईरान 60 प्रतिशत तक यूरेनियम संवर्धन कर चुका है, जो परमाणु हथियार बनाने के स्तर के बेहद करीब है। हालांकि, ईरान इन आरोपों से इनकार करते हुए अपने परमाणु कार्यक्रम को शांतिपूर्ण बताता रहा है। ईरान के भीतर यह डर गहरा है कि मौजूदा युद्धविराम सिर्फ अमेरिका की एक रणनीति है ताकि तेहरान को सुरक्षित महसूस कराकर दोबारा हमला किया जा सके। इसी वजह से ईरान का नेतृत्व अब ज्यादा सख्त रुख अपना रहा है। फरवरी 2026 में शुरू हुए संघर्ष के बाद से हालात लगातार तनावपूर्ण बने हुए हैं, जब अमेरिका और इजरायल ने ईरान के सैन्य व परमाणु ठिकानों पर हमले किए थे और जवाब में ईरान ने भी मिसाइलें दागी थीं।

ट्रंप के बाद अब शहबाज जाने वाले हैं चीन

कूटनीतिक खिचड़ी पर हैं सबकी नजर

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ 23 से 26 मई के बीच चीन की महत्वपूर्ण आधिकारिक यात्रा पर जाने वाले हैं। चीन के प्रधानमंत्री ली क्वियांग के विशेष निमंत्रण पर हो रहे इस दौरे के दौरान शहबाज शरीफ चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग और प्रधानमंत्री ली क्वियांग से मुलाकात करेंगे। रणनीतिक दृष्टिकोण से यह यात्रा बेहद संवेदनशील समय पर हो रही है, क्योंकि हाल ही में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप भी चीन का दौरा कर चुके हैं, जहां ईरान युद्ध और ताइवान जैसे वैश्विक मुद्दों पर चीनी नेतृत्व के साथ गहन चर्चा हुई थी। ऐसे में अब पाकिस्तान और चीन के शीर्ष नेताओं की यह बैठक वैश्विक कूटनीति के लिहाज से काफी मायने रखती है।

चीन के विदेश मंत्रालय के अनुसार, शरीफ का यह दौरा दोनों देशों के बीच संबंधों को एक नए स्तर पर ले जाने के लिए काफी अहम साबित होने

वाला है। बीजिंग और इस्लामाबाद ने हमेशा प्रमुख अंतरराष्ट्रीय और क्षेत्रीय मुद्दों पर करीबी संवाद और आपसी समन्वय बनाए रखा है, जिससे दोनों पक्षों के साझा हितों की प्रभावी सुरक्षा हुई है। चीन को उम्मीद है कि इस यात्रा के जरिए दोनों देश अपनी पारंपरिक दोस्ती, बहुआयामी सहयोग और एकता का एक नया अध्याय लिखेंगे, ताकि बदलते वैश्विक परिवेश में चीन-पाकिस्तान समुदाय एक मजबूत और साझा भविष्य की ठोस नींव रख सके। इस कूटनीतिक हलचल के बीच, चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग ने अपने पाकिस्तानी समकक्ष आसिफ अली जरदारी को दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर बधाई संदेश भी भेजा है। अपने संदेश में चीनी राष्ट्रपति ने पाकिस्तान को हर मौसम का भरोसेमंद रणनीतिक साझेदार और एक सच्चा दोस्त बताया। उन्होंने इस बात पर विशेष जोर दिया कि कूटनीतिक संबंध बनने के बीते 75 वर्षों में दोनों देशों के बीच की दोस्ती हमेशा मजबूत और अटूट रही है, जो समय के साथ और गहरी हुई है। चीन और पाकिस्तान के बीच लंबे समय से उच्च-स्तरीय राजनीतिक विश्वास, व्यावहारिक सहयोग और सुरक्षा समन्वय बना हुआ है। राष्ट्रपति जिनपिंग ने स्पष्ट किया है कि वे पाकिस्तान के साथ संबंधों को अत्यधिक महत्व देते हैं। इस ऐतिहासिक वर्षगांठ को एक बड़े अवसर के रूप में देखते हुए दोनों देश पारंपरिक दोस्ती को बढ़ाने, सुरक्षा व्यवस्था को पुख्ता करने और आर्थिक सहयोग को और बेहतर करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। इस यात्रा से क्षेत्र में नए सुरक्षा और आर्थिक समीकरण बनने की संभावना है।

खराब थी दाईं किडनी, निकाल दी बाईं, मौत

दो करोड़ का हर्जाना भरेंगे डॉक्टर

नई दिल्ली, एजेंसी। उत्तर प्रदेश से एक हैरान कर देने वाला मामला सामने आया है। यहां एक महिला की दाईं किडनी खराब थी, लेकिन लापरवाह डॉक्टर ने बाईं किडनी निकाल दी, जिसके कुछ दिन बाद उसकी मौत हो गई। इस घोर लापरवाही पर अब डॉक्टर को दो करोड़ का हर्जाना भरना पड़ेगा। यह पूरा मामला साल 2012 का है, जब शांति देवी नामक महिला पेट दर्द की शिकायत लेकर डॉक्टर राजीव लोचन के पास पहुंची थीं। जांच रिपोर्ट में साफ था कि महिला की दाहिनी किडनी खराब हो चुकी है और बाईं किडनी पूरी तरह स्वस्थ है। डॉक्टरों ने खराब दाहिनी किडनी को निकालने के लिए 6 मई 2012 को महिला का ऑपरेशन किया। ऑपरेशन के कुछ हफ्तों बाद भी जब महिला की तबीयत में सुधार नहीं हुआ, तो परिवार ने जून 2012 में दोबारा सीटी स्कैन और रेडियोलॉजिकल टेस्ट कराया। इस जांच में जो खुलासा हुआ उसने सबको झकझोर कर रख दिया। रिपोर्ट में सामने आया कि महिला की खराब दाहिनी किडनी शरीर में ही मौजूद थी, जबकि डॉक्टरों ने उसकी स्वस्थ बाईं किडनी को बाहर निकाल दिया था। इस गलत ऑपरेशन के बाद महिला की स्थिति लगातार बिगड़ती गई। उन्हें दो साल तक डायलिसिस पर रहना पड़ा और आखिरकार 20 फरवरी 2014 को उनकी मौत हो गई। घटना के करीब 14 साल बाद राष्ट्रीय उपभोक्ता विवाद निवारण आयोग (एनसीडीआरसी) ने इसे चिकित्सा क्षेत्र की बड़ी विफलता मानते हुए दोषी डॉक्टर को पीड़ित परिवार को दो करोड़ रुपये का मुआवजा देने का ऐतिहासिक आदेश दिया है। सुनवाई के दौरान उत्तर प्रदेश मेडिकल काउंसिल और मेडिकल काउंसिल ऑफ इंडिया दोनों ने डॉक्टर को दोषी पाया था।

'सुपर एल नीनो' जैसी खतरनाक स्थिति हो सकती है विकसित: वैज्ञानिक

वाशिंगटन , एजेंसी। वर्ष 2026 के अंत तक 'सुपर एल नीनो' जैसी खतरनाक जलवायु स्थिति विकसित हो सकती है, जिसका असर पूरी दुनिया के मौसम पर देखने को मिलेगा। यह गंभीर चेतावनी दी है विशेषज्ञों ने। प्रशांत महासागर में तेजी से बदलते समुद्री तापमान ने दुनिया भर के वैज्ञानिकों की चिंता बढ़ा दी है। वैज्ञानिकों के अनुसार यह घटना सूखा, बाढ़, भीषण तूफान, खाद्य संकट और बड़े पैमाने पर आर्थिक नुकसान जैसी स्थितियां पैदा कर सकती है। अमेरिका की नेशनल ओशनिक एंड एटमॉस्फेरिक एडमिनिस्ट्रेशन यानी एनओएए की हालिया रिपोर्ट के मुताबिक मई से जुलाई 2026 के बीच एल नीनो बनने की संभावना 82 प्रतिशत तक पहुंच गई है। वहीं दिसंबर 2026 से फरवरी 2027 के दौरान इसके बने रहने की संभावना 96 प्रतिशत बताई गई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि सुपर एल नीनो बनने की आशंका लगातार बढ़ रही है और कुछ मौसम मॉडल इसे अत्यधिक गंभीर स्तर तक पहुंचने की संभावना जता रहे हैं। वैज्ञानिकों के

अनुसार सुपर एल नीनो उस स्थिति को कहा जाता है जब प्रशांत महासागर के उष्णकटिबंधीय हिस्से में समुद्र की सतह का तापमान सामान्य से 2 से 3 डिग्री सेल्सियस या उससे अधिक बढ़ जाता है। समुद्र के तापमान में यह बदलाव वैश्विक मौसम प्रणाली को प्रभावित करता है। इससे दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में मौसम का संतुलन बिगड़ जाता है और अत्यधिक गर्मी, बारिश या सूखे जैसी स्थितियां पैदा होने लगती हैं। इतिहास में 1877-78 का सुपर एल नीनो सबसे विनाशकारी माना जाता है। उस दौरान भारत, चीन, ब्राजील और अफ्रीका के कई हिस्सों में भयंकर सूखा पड़ा था। फसलों के नष्ट होने से बड़े पैमाने पर अकाल फैला और करोड़ों लोगों की मौत हुई थी। वैज्ञानिकों का मानना है कि यदि इस बार भी वैसी स्थिति बनती है तो ग्लोबल वार्मिंग के कारण इसका असर और ज्यादा गंभीर हो सकता है। भारत पर इसका सबसे बड़ा प्रभाव मानसून पर पड़ सकता है। सामान्य तौर पर एल नीनो के दौरान मानसून कमजोर हो जाता है, जिससे वर्षा कम होती है और खरीफ फसलों का उत्पादन प्रभावित होता है। इससे किसानों की आय पर असर पड़ सकता है और खाद्यान्न संकट की स्थिति भी बन सकती है। विशेषज्ञों का कहना है कि यदि समय रहते तैयारी नहीं की गई तो कृषि क्षेत्र को भारी नुकसान झेलना पड़ सकता है। दुनिया के अन्य हिस्सों में भी इसके अलग-अलग प्रभाव देखने को मिल सकते हैं। दक्षिण अमेरिका में अत्यधिक बारिश और बाढ़, ऑस्ट्रेलिया और इंडोनेशिया में सूखा, अमेरिका के कुछ हिस्सों में ठंडी और नम सर्दियां तथा प्रशांत महासागर क्षेत्र में अधिक शक्तिशाली तूफानों की संभावना जताई जा रही है। इसके अलावा समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र पर भी खतरा बढ़ सकता है।

मोहन सरकार की नई तबादला नीति जारी

जीएडी ने कहा-टारगेट एचीव न करने वाले अफसर-कर्मचारी तीन साल से पहले भी हटाए जा सकेंगे

भोपाल। मध्यप्रदेश सरकार ने तबादला नीति 2026 शुक्रवार को जारी कर दी है। मुख्यमंत्री मोहन यादव सरकार की नई नीति के अनुसार अब उन अधिकारी-कर्मचारियों के तबादले प्रशासनिक आधार पर प्राथमिकता से किए जाएंगे, जो सरकार के तय लक्ष्य पूरे करने में असफल रहे हैं। सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी) ने बुधवार को कैबिनेट की मंजूरी के बाद आदेश जारी करते हुए विभागों को 1 जून से 15 जून 2026 तक तबादले करने की अनुमति दी है। नई नीति में स्पष्ट किया गया है कि प्रथम और द्वितीय श्रेणी के कार्यपालिक अधिकारियों को एक ही जिले में तीन वर्ष पूरे होने पर जिले से बाहर स्थानांतरित किया जा सकेगा। वहीं तृतीय श्रेणी के कर्मचारियों का भी एक स्थान पर तीन वर्ष या उससे अधिक समय पूरा होने पर तबादला किया जा सकेगा।

तीन साल की अवधि पूरी होना अनिवार्य शर्त नहीं : सरकार ने यह भी साफ किया है कि तीन साल की अवधि पूरी होना अनिवार्य शर्त नहीं होगी। यदि कोई अधिकारी या कर्मचारी पिछले वित्तीय वर्ष के निर्धारित लक्ष्य पूरे नहीं कर पाया है, तो उसका तबादला तय अवधि से पहले भी किया जा सकेगा। प्रशासनिक आधार पर ऐसे कर्मचारियों को प्राथमिकता दी जाएगी जिनका प्रदर्शन कमजोर रहा है। जीएडी ने विभागों को निर्देश दिए हैं कि निर्माण और नियामक प्रकृति वाले विभागों को छोड़कर केवल तीन वर्ष की अवधि को तबादले का आधार न बनाया जाए। न्यायालय के आदेश, गंभीर शिकायत, रिक्त पदों की पूर्ति, पदोन्नति और प्रतिनियुक्ति से वापसी जैसे मामलों में भी विभाग तय प्रक्रिया के तहत तबादले कर सकेंगे। हालांकि रिक्त पदों की पूर्ति के लिए श्रृंखलाबद्ध तबादलों पर रोक रहेगी।

पदस्थापना प्रशासनिक आवश्यकता के अनुसार होगी : नई नीति के तहत स्वयं के खर्च पर या परस्पर स्थानांतरण के आवेदन ऑनलाइन अथवा कार्यालय प्रमुख द्वारा सत्यापित आवेदन के रूप में स्वीकार किए जाएंगे। प्रशासनिक और स्वेच्छिक तबादलों के आदेश अलग-अलग जारी किए जाएंगे।

शिक्षा विभाग के लिए विशेष प्रावधान करते हुए कहा गया है कि जिन कर्मचारियों ने निर्धारित लक्ष्य पूरे नहीं किए हैं, उनके तबादलों को प्राथमिकता दी जाएगी। जिन कर्मचारियों की सेवानिवृत्ति में एक वर्ष या उससे कम समय शेष है, उनका तबादला सामान्यतः नहीं किया जाएगा। पति-पत्नी को एक स्थान पर पदस्थ करने के लिए आवेदन स्वीकार किए जाएंगे, लेकिन पदस्थापना प्रशासनिक आवश्यकता के अनुसार तय होगी।

स्वेच्छा से स्थानांतरण संभव होगा : नीति में गंभीर बीमारियों से पीड़ित कर्मचारियों को भी राहत दी गई है। कैंसर, डायलिसिस, ओपन हार्ट सर्जरी जैसी गंभीर बीमारियों के मामलों में जिला मेडिकल बोर्ड की अनुशंसा पर स्थानांतरण किया जा सकेगा। वहीं 40 प्रतिशत या उससे अधिक दिव्यांग कर्मचारियों का सामान्यतः तबादला नहीं किया जाएगा, लेकिन उनकी स्वेच्छा पर स्थानांतरण संभव होगा। अविवाहित, विधवा, तलाकशुदा और परित्यक्ता महिलाओं को उनके गृह जिले में पदस्थ किए जाने का प्रावधान किया गया है। कृषि विभाग के तृतीय श्रेणी कर्मचारियों को गृह तहसील और विकासखंड छोड़कर गृह जिले में पदस्थ किया जा सकेगा।

छिंदवाड़ा में भारत गैस एजेंसी पर हंगामा

उपभोक्ताओं ने लगाया ब्लैक में सिलेंडर बेचने का आरोप

छिंदवाड़ा। छिंदवाड़ा में शुक्रवार सुबह खजरी रोड स्थित भारत गैस एजेंसी के गोदाम में उपभोक्ताओं ने जमकर हंगामा किया। लोगों का आरोप है कि एजेंसी द्वारा घरेलू गैस सिलेंडर समय पर उपलब्ध नहीं कराए जा रहे हैं, जबकि ब्लैक में ढाई हजार रुपए तक में सिलेंडर दिए जा रहे हैं। उपभोक्ताओं ने बताया कि एजेंसी कार्यालय पहुंचने पर उन्हें सिलेंडर देने से मना कर दिया जाता है और कहा जाता है कि गैस सिलेंडर घर पहुंचाकर दिया जाएगा लेकिन बुकिंग के 40 दिन बाद भी कई लोगों तक सिलेंडर नहीं पहुंच पा रहा है। इससे लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गुस्साए उपभोक्ताओं ने शुक्रवार सुबह एजेंसी गोदाम पहुंचकर विरोध प्रदर्शन किया और एजेंसी प्रबंधन के खिलाफ नाराजगी जताई। लोगों का कहना है कि शहर में भारत गैस की केवल एक ही एजेंसी होने के कारण उपभोक्ताओं के पास दूसरा विकल्प नहीं है और एजेंसी मनमाने तरीके से काम कर रही है। उपभोक्ताओं ने प्रशासन से मांग की है कि भारत गैस के कनेक्शन दूसरी एजेंसियों में ट्रांसफर किए जाएं या फिर शहर में नई गैस एजेंसी की व्यवस्था की जाए, ताकि लोगों को समय पर गैस सिलेंडर मिल सके।

30 मई से बदलेगी श्रीधाम एक्सप्रेस की सूरत

अब एलएचबी कोच के साथ दौड़ेगी ट्रेन, 1128 बर्थ की सुविधा भी

भोपाल। यात्रियों को बेहतर सुविधाएं देने की दिशा में भारतीय रेलवे लगातार अपने कोच और ट्रेनों को आधुनिक बना रहा है। इसी कड़ी में पश्चिम मध्य रेल, भोपाल मंडल से गुजरने वाली जबलपुर-निजामुद्दीन श्रीधाम एक्सप्रेस को अब एलएचबी (लिंक हॉफमैन बुश) कोच के साथ चलाने का फैसला लिया गया है। यह बदलाव मई के अंत से लागू होगा, जिससे यात्रियों को अधिक सुरक्षित और आरामदायक सफर का अनुभव मिलेगा।

30-31 मई से शुरू होगा नया रैक सिस्टम : रेलवे प्रशासन के अनुसार गाड़ी संख्या 12192 जबलपुर-निजामुद्दीन श्रीधाम एक्सप्रेस 30 मई 2026 से जबलपुर से एलएचबी रैक के साथ रवाना होगी। वहीं, गाड़ी संख्या 12191 निजामुद्दीन-जबलपुर श्रीधाम एक्सप्रेस 31 मई 2026 से निजामुद्दीन से एलएचबी कोच के साथ संचालित की जाएगी। यह बदलाव भोपाल मंडल के यात्रियों के लिए भी महत्वपूर्ण रहेगा, क्योंकि यह ट्रेन इस रूट से होकर गुजरती है।

22 कोच, हर वर्ग के यात्रियों के लिए बेहतर विकल्प : नए एलएचबी रैक में कुल 22 कोच होंगे। इसमें प्रथम एसी, द्वितीय एसी, तृतीय एसी, थर्ड एसी इकॉनमी, स्लीपर और सामान्य श्रेणी के डिब्बे शामिल हैं। साथ ही एसएलआरडी और जनरेटर कार भी जोड़ी गई हैं। इस नई संरचना से ट्रेन की क्षमता और संचालन दोनों में सुधार होगा।

अब 1128 बर्थ की सुविधा, भीड़ में मिलेगी राहत : एलएचबी कोच लगने के बाद इस ट्रेन में कुल 1128 आरक्षित बर्थ उपलब्ध होंगी। इनमें प्रथम एसी में 24, द्वितीय एसी में 104, तृतीय एसी में 360, थर्ड एसी इकॉनमी में 80 और स्लीपर क्लास में 560 बर्थ शामिल हैं। इससे यात्रियों को सीट मिलने की संभावना बढ़ेगी और वेटिंग की समस्या में भी कमी आएगी। **एलएचबी कोचः ज्यादा सुरक्षित, तेज और आरामदायक सफर :** एलएचबी कोच पारंपरिक आईसीएफ कोच की तुलना में अधिक आधुनिक माने जाते हैं। इनकी डिजाइन बेहतर होती है, वजन कम होता है और हाई स्पीड पर भी स्थिरता बनाए रखते हैं। दुर्घटना की स्थिति में इनकी सुरक्षा क्षमता अधिक होती है, जिससे यात्रियों की जान-माल का जोखिम कम होता है। भोपाल मंडल की यह पहल साफ संकेत देती है कि रेलवे अब सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि सफर की गुणवत्ता पर भी गंभीरता से काम कर रहा है। यात्रियों के लिए यह बदलाव आने वाले समय में और भी बेहतर रेल अनुभव का आधार बन सकता है।

बैतूल में नाले में मिला अज्ञात युवक का शव

बैतूल। बैतूल के गंज थाना क्षेत्र में एक नाले से अज्ञात युवक का शव मिलने का मामला सामने आया है। तीन दिन तक पहचान नहीं होने पर पुलिस ने सामाजिक संगठनों और नगर पालिका कर्मचारियों की मदद से युवक का हिंदू रीति-रिवाज से अंतिम संस्कार कराया। पुलिस को 20 मई की रात करीब 9 बजे सूचना मिली थी कि हमलापुर के मांझी नगर स्थित ह्यअपना ढाबाह्ल के पास नाले में एक शव पड़ा हुआ है। सूचना मिलते ही गंज थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू की। पुलिस के मुताबिक मृतक की उम्र करीब 35 वर्ष थी। उसकी लंबाई लगभग 5 फीट 5 इंच, रंग गेहुआ, चेहरा गोल और बाल काले थे। युवक की हल्की दाढ़ी-मूंछ थी। शव पर कोई कपड़ा नहीं था, लेकिन कमर में काला धागा और दाहिने हाथ में कुसुम का कलेवा बंधा मिला। पेट पर जलने का पुराना निशान भी पाया गया।

राज्यसभा चुनाव के लिए 18 जून को मतदान

कांग्रेस से कमलनाथ, पटवारी, अरुण यादव रेस में; कुरियन को रिपीट कर सकती है बीजेपी

भोपाल। भारत निर्वाचन आयोग ने राज्यसभा चुनाव की तारीखों का ऐलान शुक्रवार को कर दिया है। 12 राज्यों की 26 राज्यसभा सीटों पर 18 जून को मतदान होगा। इनमें मध्य प्रदेश की तीन सीटें शामिल हैं। मध्य प्रदेश से राज्यसभा के तीन सदस्यों का कार्यकाल 21 जून को खत्म हो रहा है। इनमें कांग्रेस के दिग्विजय सिंह जबकि बीजेपी से केंद्रीय मंत्री जॉर्ज कुरियन और डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी शामिल हैं। कांग्रेस से दिग्विजय सिंह इस बार चुनाव लड़ने से मना कर चुके हैं। उनकी सीट पर पूर्व सीएम कमलनाथ, पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी, कमलेश्वर पटेल, अरुण यादव, सज्जन सिंह वर्मा के नाम रेस में हैं। वहीं, बीजेपी कुरियन को दोबारा उच्च सदन भेज सकती है। सुमेर सिंह की सीट पर भी किसी और आदिवासी चेहरे को उतारा जा सकता है।

कांग्रेस के लिए संख्याबल जुटाना चुनौती : कांग्रेस के लिए मुश्किल यह है कि दतिया विधायक राजेंद्र भारती की विधानसभा सदस्यता जा चुकी है। विजयपुर विधायक मुकेश मल्होत्रा राज्यसभा चुनाव में मतदान नहीं कर पाएंगे। बीना विधायक निर्मला सप्रे बीजेपी और कांग्रेस के बीच झूल रही हैं। ऐसे में वो किस दल के पक्ष में मतदान करेंगी, फिलहाल निश्चित नहीं है।

कुरियन की केंद्र सरकार में प्रमुख भूमिका : जॉर्ज कुरियन केंद्र की मोदी सरकार के तीसरे कार्यकाल में मत्स्य पालन, पशुपालन, डेयरी और अल्पसंख्यक मामलों के राज्यमंत्री की जिम्मेदारी संभाल रहे हैं। वे भाजपा के उन पुराने और वफादार नेताओं में गिने जाते हैं, जिन्होंने पार्टी के गठन के समय से ही इसका झंडा थाम रखा है। वे 1980 से पार्टी से जुड़े हैं। हाल ही में उन्होंने केरलम विधानसभा चुनाव में कांजिरापल्ली सीट से किस्मत आजमाई थी, लेकिन हार का सामना करना पड़ा। केरलम जैसे राज्य में पार्टी का ईसाई चेहरा होने और केंद्र सरकार में सक्रिय भूमिका के कारण यह माना जा रहा है कि पार्टी उन्हें एक बार फिर मध्य प्रदेश के कोटे से ही उच्च सदन भेज सकती है।

पेशे से वकील कुरियन सुप्रीम कोर्ट में प्रैक्टिस कर चुके हैं। वे दक्षिण भारत में प्रधानमंत्री मोदी के प्रमुख अनुवादक की भूमिका भी निभाते रहे हैं। वे भारतीय जनता युवा मोर्चा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष और अल्पसंख्यक आयोग के उपाध्यक्ष रह चुके हैं। कुरियन मध्य प्रदेश से पहली बार अगस्त 2024 में उपचुनाव के जरिए राज्यसभा पहुंचे थे, जब ज्योतिरादित्य सिंधिया के लोकसभा सदस्य बनने के बाद यह सीट खाली हुई थी।

सुमेर की सीट पर विकल्प के लिए मंथन : डॉ. सुमेर सिंह सोलंकी बीजेपी के प्रदेश महामंत्री बनाए जा चुके हैं। वे संघनिष्ठ आदिवासी चेहरे हैं। मध्य प्रदेश में 22 फीसदी आदिवासी आबादी है। ऐसे में बीजेपी के अंदरखाने उनकी सीट पर आदिवासी नेताओं के नामों पर विचार किया जा रहा है। हालांकि, अंतिम फैसला दिल्ली से ही होगा। इससे पहले साल 2020 में जब राज्यसभा चुनाव के लिए उम्मीदवारों के नामों पर मंथन चल रहा था, तब बीजेपी ने सोलंकी के नाम की घोषणा कर सबको चौंका दिया था। उस समय वे सरकारी नौकरी में थे, इसलिए चुनाव लड़ने के लिए उन्होंने तत्काल प्रोफेसर के पद से इस्तीफा दिया। तकनीकी कारणों से उनका इस्तीफा मंजूर होने में कुछ देरी हुई थी, लेकिन अंततः वे चुनावी मैदान में उतरे और राज्यसभा पहुंचे थे।

छिंदवाड़ा में 90 मिनट में 16 बार गुल हुई लाइट

मेंटेनेंस के बाद भी कटौती से लोग परेशान, उपभोक्ता ने अंधेरे में बैठकर बनाया वीडियो

छिंदवाड़ा। छिंदवाड़ा में बिजली विभाग की लापरवाही को लेकर लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। लगातार मेंटेनेंस के नाम पर 4 से 5 घंटे तक बिजली आपूर्ति बंद रखने के बावजूद शहर के अलग-अलग इलाकों में बार-बार बिजली कटौती हो रही है। गुरुवार रात नरसिंहपुर नाका क्षेत्र में बार-बार बिजली जाने से परेशान उपभोक्ताओं का गुस्सा खुलकर सामने आया। गणेश कॉलोनी निवासी फहीम अली ने अंधेरे में बैठकर एक वीडियो बनाकर सोशल मीडिया पर जारी किया। वीडियो में उन्होंने बिजली विभाग की कार्यप्रणाली पर सवाल उठाते हुए कहा कि बिना आंधी, तूफान और बारिश के भी क्षेत्र में लगातार बिजली कटौती की जा रही है।

उन्होंने बताया कि केवल 90 मिनट के भीतर 16 बार बिजली गुल हुई, जिससे लोग पूरी रात परेशान होते रहे।

घंटों बिजली बंद रहने से लोग परेशान : स्थानीय लोगों का कहना है कि पिछले कुछ दिनों से विभाग द्वारा लगातार मेंटेनेंस किया जा रहा है। कई इलाकों में घंटों बिजली बंद रखी जा रही है, लेकिन इसके बाद भी बिजली व्यवस्था में सुधार नजर नहीं आ रहा। उल्टा कटौती और ट्रिपिंग की समस्या बढ़ गई है। भीषण गर्मी के बीच बिजली संकट ने लोगों की मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। छिंदवाड़ा में तापमान 42 से 43 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच रहा है। ऐसे में कूलर और पंखों के बिना घरों में रहना मुश्किल हो रहा है। रात में बार-बार बिजली जाने से बुजुर्ग, बच्चे और मरीज सबसे ज्यादा परेशान हैं।

रहवासियों का आरोप है कि बिजली विभाग मेंटेनेंस के नाम पर केवल औपचारिकता निभा रहा है। यदि समय-समय पर सुधार कार्य किए जा रहे हैं तो फिर बार-बार ट्रिपिंग और कटौती क्यों हो रही है।

रायसेन में 21 कुंडीय श्री रुद्र महायज्ञ शुरू

रायसेन। रायसेन शहर की कलेक्ट्रेट कॉलोनी स्थित प्राचीन हरिहर आश्रम श्री हनुमान मंदिर, रामपुर में आज 22 मई से 21 कुंडीय श्री रुद्र महायज्ञ, हनुमंत कथा और दिव्य दरबार का शुभारंभ हुआ। इस धार्मिक आयोजन के पहले दिन गुरुवार सुबह एक कलश यात्रा निकाली गई। जिसमें बड़ी संख्या में महिलाओं और श्रद्धालुओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कलश यात्रा सुबह 10 बजे वार्ड क्रमांक 9 स्थित तालाब गणेश मंदिर से शुरू हुई। यह यात्रा इंडियन चौराहा, माता मंदिर और जिला अस्पताल के सामने से होते हुए सांची रोड मार्ग से यज्ञ स्थल प्राचीन हरिहर आश्रम श्री हनुमान मंदिर पहुंची। यात्रा के दौरान महिलाएं सिर पर कलश धारण कर भजन-कीर्तन कर रही थीं।

सेवा समाप्ति के विरोध में सड़कों पर उतरे पेसा मोबिलाइजर

तीन दिन में बहाली नहीं हुई तो 20 जिलों में प्रदेशव्यापी आंदोलन की चेतावनी

बैतूल। बैतूल में पेसा मोबिलाइजर कर्मचारी संघ ने शुक्रवार को कलेक्ट्रेट पहुंचकर प्रदर्शन किया। संघ ने मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन सौंपकर अपनी सेवाएं समाप्त किए जाने का विरोध जताया। कर्मचारियों ने चेतावनी दी कि यदि तीन दिन के भीतर उनकी सेवाएं बहाल नहीं की गईं, तो वे प्रदेशव्यापी आंदोलन करेंगे। संघ के अनुसार, मध्यप्रदेश के 20 जिलों के 89 आदिवासी विकासखंडों में वर्ष 2021 से राष्ट्रीय ग्राम स्वराज अभियान के तहत पेसा मोबिलाइजर कार्यरत थे। हाल ही में पंचायत एवं ग्रामीण विकास संचालनालय ने एक आदेश जारी कर आरजीएसए योजना की अवधि समाप्त होने का हवाला देते हुए इन मोबिलाइजरों को सेवा मुक्त कर दिया है।

आजीविका का गंभीर संकट खड़ा हो गया : प्रदर्शनकारी कर्मचारियों ने बताया कि इस फैसले से हजारों परिवारों के सामने आजीविका का गंभीर संकट खड़ा हो गया है। प्रदेशभर में पांच हजार से अधिक पेसा मोबिलाइजर कार्यरत हैं, जिनमें से अकेले बैतूल जिले में इनकी संख्या 265 बताई जा रही है।

छोटे-छोटे स्वच्छता प्रयासों से स्वच्छ भारत का संकल्प होगा पूरा - सुमित्रा वाल्मीकि

रादुविवि में दो दिवसीय स्वच्छता कार्यशाला का उद्घाटन

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की राष्ट्रीय सेवा योजना द्वारा भारत सरकार युवा कार्यक्रम खेल मंत्रालय क्षेत्रीय निदेशालय भोपाल के निदेर्शानुसार स्वच्छता एक्शन प्लान 2025-26 के अंतर्गत दो दिवसीय स्वच्छता कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है जिसका उद्घाटन शुक्रवार को रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर की एकात्म भवन में हुआ। इस कार्यशाला का उद्देश्य समाज में हर नागरिक के अंदर स्वच्छता के भौतिक कार्य के साथ-साथ स्वभाव स्वच्छता संस्कार का भाव जागरूक करना है जिसके अंतर्गत आज कार्यशाला का प्रथम दिवस रहा जिसमें सर्वप्रथम उद्घाटन समारोह में कार्यक्रम की मुख्य अतिथि सुमित्रा बाल्मिक (राज्यसभा सांसद) रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलगुरु प्रो. राजेश कुमार वर्मा ने की। कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर पटेल (सदस्य कार्य परिषद) सारस्वत अतिथि डॉ. रविशंकर सोनवाल (कुलसचिव) कार्यक्रम संयोजक डॉ शोभाराम मेहरा (कार्यक्रम समन्वयक एनएसएस), कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. देवांशु गौतम (कार्यक्रम अधिकारी एनएसएस ओपन यूनिट, रादुविवि) की उपस्थिति में हुआ।

भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने में योगदान दें : मुख्य अतिथि सुमित्रा बाल्मिक (सांसद राज्यसभा) ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि "प्रत्येक व्यक्ति को विकसित भारत बनाने के लिए और स्वच्छ भारत के निर्माण में अपना बहुमूल्य योगदान देना चाहिए, जैसे छोटे-छोटे तिनके के एकत्रित करके एक पक्षी अपना घोसला बसता है। इसी प्रकार से हम सभी के छोटे-छोटे प्रयास भारत को पुनः विश्व गुरु बनाने में महत्वपूर्ण योगदान देंगे साथ ही सुमित्रा बाल्मीकि ने अपने जीवन काल के किस्से व उदाहरण सहित युवाओं को समझने का

प्रयास किया कि यह जीवन बड़ा अनमोल है और इसका उपयोग हमें राष्ट्र निर्माण एवं सामाजिक हित में करना चाहिए, एनएसएस द्वारा ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है जिसमें अत्यधिक संख्या में युवा सहभागिता करते हैं मैं इसके लिए रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय की पूरी एनएसएस टीम व प्रशासन को बधाई व शुभकामनाएं देती हूं। उद्घाटन सत्र में सर्वप्रथम अतिथियों ने स्वामी विवेकानंद एवं देवी मां सरस्वती को पुष्पांजलि अर्पित करते हुए दीप प्रज्वलन किया। जिसके बाद अतिथियों का तिलक बैच व तुलसी पौधे देकर स्वागत किया गया। इसके पश्चात कार्यक्रम संयोजक डॉ शोभाराम मेहरा ने अस्थियों का स्वागत भाषण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम सह-संयोजक डॉ. देवांशु गौतम ने कार्यक्रम की आयोजन उद्देश्य रूपरेखा के बारे में सभा को जानकारी दी। विशिष्ट अतिथि चंद्रशेखर पटेल ने युवाओं को संबोधित करते हुए कहा कि युवाओं में वह ताकत रखते है कि स्वच्छ वातावरण और स्वच्छ भारत का निर्माण कर सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे प्रो. राजेश कुमार वर्मा ने अपने उद्बोधन में कहा कि हम सभी को स्वच्छता कार्य करते हुए अपने संस्कारों व स्वभाव में भी स्वच्छता के भाव को विकसित करना होगा ताकि जिस प्रकार से मध्य प्रदेश का इंदौर स्वच्छता में प्रथम और जबलपुर एयर क्वालिटी इंडेक्स में 5वें स्थान में है, आने वाले समय में दोनों क्षेत्रों में जबलपुर संस्कारधानी सर्वोच्च स्थान पर हो। उद्बोधन के पश्चात अतिथियों द्वारा टी-शर्ट एवं केप का अनावरण किया गया और मुख्य अतिथि सुमित्रा बाल्मीकि द्वारा उपस्थित सहभागियों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई जिसके बाद डॉ भागवत झरिया द्वारा स्वरचित स्वच्छता गीत प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात आयोजकों द्वारा अतिथियों व अध्यक्ष को शॉल-स्मृति चिन्ह भेंटकर उनका सम्मान किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन एवं आभार प्रदर्शन डॉ देवांशु गौतम द्वारा किया गया। प्रथम उद्घाटन सत्र का समापन राष्ट्रगान के द्वारा हुआ। इसके पश्चात दूसरे सत्र का आयोजन किया गया जिसमें स्वयंसेवक छात्र-छात्राओं व कार्यक्रम अधिकारियों सहित सभी ने स्वच्छता श्रमदान किया, स्वच्छता जागरूकता रैली निकाली और युवाओं हेतु स्वच्छता संवाद विमर्श का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें युवाओं ने स्वच्छता एवं व्यक्ति का जीवन से जुड़े हुए कुछ जिज्ञासा प्रश्न पूछे जिसका समाधान विषय विशेषज्ञों द्वारा किया गया।

यह रहे उपस्थित : कार्यक्रम के सफल आयोजन में डॉ. ज्योत्सना झरिया, डॉ. प्रज्ञा दुबे, डॉ शैलेश प्रसाद, डॉ. विधि जैन, डॉ. भागवत झरिया, डॉ रजनीश कुशवाहा, राघवेंद्र मिश्रा सत्येंद्र पटेल सहित वरिष्ठ स्वयंसेवकों में अरविंद कुमार लोधी, सुयश श्रीवास्तव, अमित शिवहरे, निखिल कुमार गुप्ता, मौसमी गौतम, खुशीअनुश्री श्रीवास्तव, मेघा यादव, दीक्षा चौरसिया, यशवीर सूर्यवंशी, नैंसी, खुशी, सौरभ, अंकित, मीनाक्षी, रागिनी केसरी, सोनिया गोस्वामी, संध्या सिंह, वेदा सराफ आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

भेड़ाघाट को विश्वस्तरीय पर्यटन केंद्र एवं कटंगी को आर्थिक-सामाजिक हब बनाने की दिशा में तेज होंगे कार्य

जिला शहरी विकास अभिकरण की जिला स्तरीय समीक्षा एवं निगरानी समिति की बैठक आयोजित

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

कलेक्टर राघवेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में आज कलेक्टर कार्यालय में जिला शहरी विकास अभिकरण की जिला स्तरीय समीक्षा एवं निगरानी समिति की बैठक आयोजित की गई। बैठक में बरगी विधायक नीरज सिंह, सिहोरा विधायक संतोष वरकड़े, नगर निगम आयुक्त रामप्रकाश अहिरवार सहित सभी नगरीय निकायों के अध्यक्ष एवं अधिकारी उपस्थित रहे।

बैठक में अमृत 2.0 अंतर्गत अटल नवीनीकरण और शहरी परिवर्तन मिशन के तहत हरित क्षेत्र विकास, जल निकायों के कायाकल्प, जल प्रदाय एवं सीवरेज कार्यों की विस्तार से समीक्षा की गई। नगरीय परिषदवार प्रगति की जानकारी लेते हुए पौधारोपण, पाथ-वे निर्माण, वॉटर बॉडी विकास एवं सौंदर्यीकरण संबंधी कार्यों पर चर्चा हुई। बैठक में केंद्र सरकार की नई प्रायोजित योजना अर्बन चैलेंज फंड के अंतर्गत प्रस्तावित परियोजनाओं की भी जानकारी प्रस्तुत की गई। प्रस्तावित परियोजना-1 के तहत कटंगी को शहरी बुनियादी ढांचे के रूप में विकसित करते हुए लगभग 16 करोड़ रुपये की लागत से आर्थिक एवं सामाजिक हब बनाने की योजना पर चर्चा की गई। वहीं प्रस्तावित परियोजना-2 के अंतर्गत भेड़ाघाट को पर्यटन की दृष्टि से विकसित करने हेतु आवश्यक सुविधाओं एवं सौंदर्यीकरण कार्यों पर विस्तार से विचार-विमर्श किया गया। बरगी विधायक नीरज सिंह ने भेड़ाघाट स्वर्गद्वारी रोड के सौंदर्यीकरण, गार्डन, ग्रीन पार्क, जूलॉजिकल गार्डन, बेहतर लाइटिंग व्यवस्था एवं स्वीमिंग पूल निर्माण के सुझाव दिए, जिससे भेड़ाघाट को आकर्षक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा सके। कलेक्टर सिंह ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि परियोजनाओं को बड़े स्तर एवं उच्च गुणवत्ता के साथ तैयार किया जाए। नगर निगम आयुक्त अहिरवार ने भी परियोजना को नई दिशा देने की बात कही। बैठक में यूसीएफ अंतर्गत पनागर क्षेत्र के सुंदरवन को ईको-टूरिज्म हब के रूप में विकसित करने पर भी चर्चा की गई। सिहोरा विधायक संतोष वरकड़े ने सिहोरा क्षेत्र में प्रगतिरत कार्यों की धीमी गति एवं स्थानीय समस्याओं की जानकारी दी। इस पर कलेक्टर सिंह ने संबंधित अधिकारियों को समस्याओं का गंभीरता से निराकरण करते हुए सभी कार्य निर्धारित समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने सिहोरा एवं मझौली क्षेत्र में पेयजल समस्या की समीक्षा करते हुए सभी स्थानों पर सुचारु पेयजल उपलब्ध कराने के निर्देश भी दिए। बैठक में स्वच्छ सर्वेक्षण, कचरा संग्रहण एवं परिवहन व्यवस्था की भी नगरीय निकायवार समीक्षा की गई। कचरे के संग्रहण एवं कठौंदा कचरा प्लांट तक परिवहन की स्थिति की जानकारी ली गई। कलेक्टर सिंह ने निर्देश दिए कि जिन निकायों में कचरे के ढेर लगे हैं, वहां शीघ्र परिवहन सुनिश्चित किया जाए तथा समस्याग्रस्त क्षेत्रों में नगरीय परिषदों के साथ समन्वय बैठक कर कार्ययोजना तैयार की जाए। नगर निगम आयुक्त अहिरवार ने कठौंदा कचरा प्लांट से संबंधित कार्ययोजना की जानकारी दी। कलेक्टर सिंह ने स्वच्छ सर्वेक्षण में बेहतर प्रदर्शन हेतु सभी नगरीय निकायों के कर्मचारियों से जनप्रतिनिधियों एवं पार्षदों के माध्यम से नागरिकों को अधिक से अधिक फीडबैक देने के लिए प्रेरित करने का आह्वान किया, ताकि जबलपुर पुनः स्वच्छ सर्वेक्षण में उत्कृष्ट स्थान प्राप्त कर सके। बैठक में नगरीय निकायों एवं नगरीय परिषदों के अधिकारी-कर्मचारी उपस्थित रहे।

त्रिदेव की कृपा प्राप्त करने दत्त प्रभु की आराधना आवश्यक

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

पुरुषोत्तम मास (अधिक मास) में भगवान दत्तात्रेय का यज्ञ और उनकी उपासना करना मोक्ष, आध्यात्मिक ज्ञान, और गुरु कृपा प्राप्ति के लिए अत्यंत फलदायी माना जाता है। त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) के अवतार माने जाने वाले भगवान दत्त की पूजा इस मास में भक्तों को जन्म-मरण के चक्र से मुक्त कर सकती है.पुरुषोत्तम मास में श्री दत्त भगवान यज्ञ और साधना का फल अर्थात ब्रह्म, विष्णु और शिव की संयुक्त कृपा है. क्योंकि भगवान दत्तात्रेय त्रिमूर्ति के स्वरूप हैं, उनकी पूजा से आपको एक साथ तीनों देवों की आराधना का फल प्राप्त होता है। श्री दत्त भजन मंडळ द्वारा पुरुषोत्तम मास के उपलक्ष मे पांच दिवसीय दत्तयाग का दुसरा दिन बडे उत्साह के साथ और धार्मिक अनुष्ठान के साथ प्रारंभ हुआ। भगवदगीता में 'यज्ञ' का अर्थ विस्तार से समझाया । वैदिक आचार्यों के मार्गदर्शन में मुख्य यजमान द्वारा यज्ञशाला मे प्रतिष्ठित मुख्य दैवत दत्तात्रय भगवान की पूजा की गई. सहयजमानों द्वारा यज्ञशाला मे स्थापित पीठों का पूजन किया गया. तदोपरांत मुख्य आहुति का कार्य प्रारंभ हुआ. संस्कारधानी जबलपुर में पहली बार आयोजित हो रहे श्रीदत्तात्रेय महायज्ञ में महापौर जगत बहादुर सिंह "अन्नू",दिनेश कालवे, मनोज हर्डीकर, शरद आठले, , संदीप पिंपळे, प्रशांत कुलकर्णी .नयना महेश येवलकर, आदित्य कानडे , अशोक जोशी, जस्टिस देवदत्त धर्माधिकारी, डॉ. जितेंद्र जामदार यजमानों द्वारा सपत्नीक उपस्थित होकर विश्व कल्याणार्थ यज्ञ मे आहुति अर्पण की. यज्ञवेदी मे अर्पित आहुति देवताओं तक पहुंचती है. यज्ञ से वातावरण शुद्धि एवं विषाणु का नाश होता है. दोपहर 3 बजे से 6 बजे तक संस्कारधानी के भक्तगणो के लिए यज्ञाहुती का आयोजन किया गया जिसमे बडी संख्या मे श्रद्धालू उपस्थित थे. सभी ने आहुती प्रदान कर यज्ञशाला की प्रदक्षिणा की, तथा प्रसाद ग्रहण कर पुण्य अर्जन किया । यज्ञ का ऋत्विजत्व वेदमूर्ती कृष्णशास्त्री आर्वीकर, नागपूर, पंडित गणेश नारायण पाळंदे वाराणसी, तथा ब्रह्मवृंद समाज के पंडित मनोज गुरुजी, पंडित निलेश दाभोळकर कर रहे है. यज्ञ मे अध्यक्ष विजय भावे, शरद आठले,अजय फाटक, श्री अभय जोशी,अनिल राजूरकर, मुरलीधर पाळंदे, विश्वनाथ वैद्य, वर्षा दांडेकर, आभा रानडे, रंजना वर्तक, नितीन देसाई सुबोध गोसावी का सहयोग रहा। मंडल द्वारा सभी भक्तगणों से यज्ञ मे सहभागी होकर दर्शन करने का अनुरोध किया गया है।

पाटन के ग्राम खजरी पहुँचा कृषि रथ

किसानों को सिखाया साइलेज बनाने का वैज्ञानिक तरीका

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

किसान कल्याण वर्ष के अंतर्गत राज्य शासन के निदेर्शानुसार जिले में विकासखंड स्तर पर चलाये जा रहे 'कृषि रथ' ने आज पांचवें दिन पाटन विकासखंड के रमखिरिया, कुशली और खजरी की यात्रा की। इस दौरान किसानों को उन्नत एवं वैज्ञानिक खेती के तौर -तरीकों की जानकारी दी गई। कृषि रथ के भ्रमण के दौरान ग्राम खजरी के प्रगतिशील कृषक और युवा उद्यमी अंश सिंह चंदेल के फार्म पर विशेष कार्यक्रम का आयोजन भी किया गया। अनुविभागीय कृषि अधिकारी पाटन डॉ इंदिरा त्रिपाठी के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में क्षेत्रीय किसानों के समक्ष पशुपालन को अधिक लाभप्रद बनाने और हरे चारे की कमी को दूर करने के उद्देश्य से "पॉलीथिन पैकिंग मेथड" से साइलेज बनाने की विधि का जीवंत प्रदर्शन किया गया। अनुविभागीय कृषि अधिकारी पाटन ने किसानों को बताया कि इस आसान और कम लागत वाली विधि से किसान लंबे समय तक अपने पशुओं के लिए पौष्टिक हरा चारा सुरक्षित रख सकते हैं। युवा कृषक अंश सिंह ने बताया कि साइलेज दरअसल

कुट्टी मशीन की मदद से 1 से 2 सेंटीमीटर के छोटे-छोटे टुकड़ों में काट लिया जाता है। कटी हुई कुट्टी को मजबूत, मोटी और हवा रोधी पॉलीथिन बैग में परतों में भरा जाता है। हर परत को अच्छी तरह से दबाया जाता है ताकि उसके अंदर की पूरी हवा बाहर निकल जाए। हवा अंदर रहने पर चारा सड़ सकता है। इसके बाद चारे में फर्मेंटेशन की प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए पानी में थोड़ा गुड़ और नमक मिलाकर चारे की परतों पर छिड़काव किया जाता है। बैग को पूरा भरने के बाद उसके मुंह को रस्सी या टेप से इतनी मजबूती से बांध दिया जाता है कि बाहर की हवा या नमी अंदर न जा सके। इन बैग्स को किसी सुरक्षित और छायादार स्थान पर रख दिया जाता है। लगभग 45 से 50 दिनों में पौष्टिक और खुशबूदार साइलेज बनकर तैयार हो जाता है, जिसे दुधारू पशु बेहद चाव से खाते हैं और इससे दूध उत्पादन में भी वृद्धि होती है।

कमिश्नर ने आउटसोर्स कर्मचारियों का भुगतान कराया

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

नगर निगम कर्मचारी हितों से जुड़े विभिन्न लंबित मामलों के निराकरण हेतु आज संगठन पदाधिकारियों द्वारा महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू एवं आयुक्त राम प्रकाश अहिरवार को ज्ञापन सौंपा गया। ज्ञापन में मुख्य रूप से आउटसोर्स कंप्यूटर ऑपरेटर कर्मचारियों की लंबित एरियर्स राशि भुगतान, कर्मचारियों को समयमान वेतनमान का लाभ तथा सफाई मित्रों को झाड़ू-पंजा राशि भुगतान की मांग रखी गई। आयुक्त ने कर्मचारियों की समस्याओं को गंभीरता से लेते हुए तत्काल संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश प्रदान किए। आयुक्त के निर्देश पर आउटसोर्स कंप्यूटर ऑपरेटर कर्मचारियों की लंबित वेतन एरियर्स राशि का तत्काल भुगतान कराया गया, जिससे कर्मचारियों में खुशी एवं उत्साह का वातावरण निर्मित हुआ। इसके अतिरिक्त समयमान वेतनमान प्रकरण में भी संबंधित विभागीय अधिकारियों को आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देशित किया गया। वहीं सफाई मित्रों को झाड़ू-पंजा राशि भुगतान के संबंध में भी तत्काल निराकरण करने हेतु अधिकारियों को निर्देश दिए गए। संगठन पदाधिकारियों ने कर्मचारियों के हित में त्वरित एवं सकारात्मक कार्यवाही करने पर आयुक्त का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर संगठन अध्यक्ष अमित मेहरा सहित राजेंद्र पटेल, अक्षय कोरी, गुलशन जबलपुरी, नरसामलू कोयरी नायडू, मोहम्मद शमीम, होरीलाल पटेल, रामू भैया एवं संगठन के अन्य पदाधिकारी उपस्थित रहे।

45 डिग्री तापमान में किसानों का पारा चढ़ा, सरकार व प्रशासन को दी धमकी

स्लॉट बुकिंग व उपार्जन से वंचित हजारों किसान कलेक्टर कार्यालय में भर देंगे गेहूं

भाकिस ने उपार्जन की बदहाल व्यवस्था के खिलाफ मुख्यमंत्री के सौंपा ज्ञापन

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

भारतीय किसान संघ के नेतृत्व में सैकड़ों गांवों के किसान गेहूं उपार्जन में व्याप्त अव्यवस्थाओं और बदहाली के खिलाफ किसानों की समस्याओं को लेकर कलेक्टर कार्यालय के समीप स्थित घंटाघर पहुंचकर अपना रोष व्यक्त करते हुए दो घंटे तक जबरदस्त प्रदर्शन किया। 45 डिग्री के तापमान में किसानों के गुस्से का पारा चढ़ा दिखा और उन्होंने सरकार व प्रशासन को स्लॉट बुकिंग न होने, खरीदी केंद्रों पर वारदाने की कमी, पानी व छाया का इंतजाम न होने जैसी मूलभूत सुविधाओं की कमी को लेकर जमकर कोसा। प्रांत महामंत्री प्रहलाद सिंह पटेल व अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख राघवेन्द्र सिंह पटेल ने प्रशासन व सरकार को चेतावनी देते हुए कहा कि उपार्जन अव्यवस्था के चलते यदि जिले के चौदह हजार किसान स्लॉट बुकिंग व उपार्जन से वंचित होते हैं तो सभी

किसान कलेक्टर कार्यालय लाकर अपना गेहूं भर देंगे और अपने परिवार सहित अपना डेरा भी वहीं रख देंगे। मुख्यमंत्री के नाम डिप्टी कलेक्टर रघुवीर सिंह को सौंपे ज्ञापन में किसान संघ ने चेतावनी दी है कि यदि किसानों की गेहूं उपार्जन संबंधी बाधाओं को जल्द दूर नहीं किया गया, तो किसान उग्र आंदोलन के लिए बाध्य होंगे।

किसानों की प्रमुख मांगे : 1. महाकौशल प्रांत के 24 जिलों के लगभग 1,18,400 किसान सर्वर की खराबी के कारण अपने स्लॉट बुक नहीं कर पाए हैं। इसलिए स्लॉट बुकिंग तत्काल प्रारंभ हो।
2. केंद्रों से गेहूं का शीघ्र परिवहन कर तत्काल भुगतान प्रक्रिया में गति लाई जाए।
3. उपार्जन केंद्रों पर पेयजल, किसानों के बैठने के लिए छाया की व बारदानों की भारी पर्याप्त व्यवस्था की जाए।
4. सर्वर की खामियां दूर कर पंजीकृत सभी किसानों की स्लॉट बुकिंग सुनिश्चित की जाए।
5. उपार्जन केंद्रों पर व्यापारियों की घुसपैठ बंद हो, दोषी अधिकारियों को दंडित किया जाए और संबंधित व्यापारियों पर FIR दर्ज हो।
6. आगामी खरीफ फसलों के लिए DAP खाद और अन्य उर्वरकों की उपलब्धता अभी से सुनिश्चित की जाए।

ये रहे उपस्थित :

धरना प्रदर्शन में सैकड़ों गांवों के किसानों के साथ संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख राघवेन्द्र सिंह पटेल, प्रांत महामंत्री प्रहलाद सिंह पटेल, प्रांत उपाध्यक्ष मोहन तिवारी, संभाग उपाध्यक्ष व विद्युत नियामक आयोग के सदस्य दामोदर पटेल, प्रांत मंत्री आलोक पटेल, जिलाध्यक्ष रामदास पटेल, जिला मंत्री धनंजय सिंह पटेल, जिला प्रचार प्रमुख भरत पटेल, पाटन तहसील अध्यक्ष मुकुल पचौरी, मंझोली तहसील अध्यक्ष वीरेंद्र पटेल, शहपुरा तहसील अध्यक्ष वीरेंद्र साहू, पनागर तहसील अध्यक्ष जितेंद्र पटेल, अटल पटेल, प्रेमचंद कुर्मी, धरम पटेल, रीतेश पचौरी सहित जिले भर के किसान उपस्थिति रहे।

पार्षद दल ने जोन कार्यालय का घेराव कर भेंट किया मटका

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

टक्कर ग्राम वार्ड, शास्त्री वार्ड, अशफाक उल्लाह वार्ड, मौलाना आजाद वार्ड, राधाकृष्णन वार्ड एवं संजय गांधी वार्ड में व्याप्त पानी की समस्या एवं अन्य मूलभूत सुविधाओं एवं जनसमस्याओं को लेकर शुक्रवार को नगर निगम जोन भानतलैया कार्यालय का कांग्रेस पार्षद दल द्वारा विशाल घेराव कर प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन पूर्व क्षेत्र विधायक लखन घनघोरिया, नगर निगम नेता प्रतिपक्ष अमरीश मिश्रा एवं वरिष्ठ कांग्रेस नेता कदीर सोनी के नेतृत्व में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन पूर्व एमआईसी सदस्य गुलाम हुसैन द्वारा किया गया। प्रदर्शन के दौरान नगर निगम प्रशासन के खिलाफ जमकर नारेबाजी की गई तथा क्षेत्र में व्याप्त पानी, सफाई एवं अधूरे विकास कार्यों को लेकर आक्रोश व्यक्त किया गया। कांग्रेस नेताओं द्वारा नगर निगम अधिकारियों को प्रतीकात्मक रूप से मटका भेंट कर क्षेत्र में व्याप्त जल संकट एवं अव्यवस्थाओं की ओर ध्यान आकर्षित किया गया।

यह रहे उपस्थित :

कांग्रेस नेता गुड्डू नबी याकूब अंसारी ताहिर अली संजय अहिरवार राजू लाइक अमीन कुरैशी राजेश दीवान अदनान अंसारी ओवैस अंसारी अशरफ मंसूरी सफीक अंसारी हामिद मंसूरी आसिफ इकबाल तौफीक चंकीगुलाम जिलानी ज्ञानी चौधरी, एवं बड़ी संख्या में वार्डवासी उपस्थित रहे।

प्रधानमंत्री 23 मई को रोजगार मेले में सरकारी नौकरी में 51 हजार से अधिक नव नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे

पश्चिम मध्य रेल के जबलपुर एवं भोपाल में भी होगा आयोजन

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी कल 23 मई, 2026 को सुबह 11 बजे वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा 19वें रोजगार मेले में विभिन्न सरकारी विभागों और संगठनों में 51 हजार से अधिक नव नियुक्त युवाओं को नियुक्ति पत्र वितरित करेंगे। रोजगार सृजन को प्राथमिकता देने की प्रधानमंत्री की प्रतिबद्धता के अनुरूप रोजगार मेला इस दृष्टिकोण को साकार रूप देने की महत्वपूर्ण पहल है। रोजगार मेला आरंभ किए जाने के बाद से देश भर में अब तक आयोजित 18 रोजगार मेलों के माध्यम से लगभग 12 लाख नियुक्ति पत्र जारी किए जा चुके हैं। 19वां रोजगार मेला देश भर में 47 स्थानों पर आयोजित किया जाएगा। इसमें देश के सभी हिस्सों से चयनित नव नियुक्त उम्मीदवार रेल मंत्रालय, गृह मंत्रालय, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय, वित्तीय सेवा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग आदि सहित केंद्र सरकार के विभिन्न मंत्रालयों और विभागों में कार्यभार ग्रहण करेंगे। मध्य प्रदेश में पश्चिम मध्य रेल क्षेत्राधिकार के अंतर्गत जबलपुर एवं भोपाल में भी रोजगार मेले का आयोजन किया जाएगा। इस अवसर पर रेलवे, डाक विभाग, बैंकिंग, रक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा तथा अन्य केंद्रीय विभागों में चयनित अभ्यर्थियों को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा वर्चुअल माध्यम से नियुक्ति पत्र प्रदान किए जाएंगे।

दबंगों द्वारा शासकीय भूमि पर कब्जा मामले में हाईकोर्ट के नोटिस

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

जबलपुर। कटनी जिले की तहसील बहोरीबंद की ग्राम पंचायत चानदन खेड़ा में दबंगों द्वारा शासकीय भूमि पर कब्जा कर दुरूपयोग के मामले को एक याचिका के माध्यम से हाईकोर्ट में चुनौती दी गई। याचिका पर सुनवाई करते हुए न्यायमूर्ति द्वारकाधीश बंसल एवं बीपी शर्मा की युगलपीठ ने कलेक्टर कटनी सहित अन्य को नोटिस जारी कर चार सप्ताह में जवाब तलब किया है। यह याचिका क्षेत्रीय निवासी कालू राम व किशन सिंह की ओर से दायर की गई है। याचिका की सुनवाई के दौरान दलीलें देते हुए याचिकाकर्ता के अधिवक्ता शंभू दयाल गुप्ता, कपिल गुप्ता ने न्यायालय को बताया कि ग्राम पंचायत चांदन खेड़ा का किशन यादव जो ग्राम का दबंग व्यक्ति है ने ग्राम सांडा चांदन खेड़ा में शासकीय भूमि है जो मरघट के लिए सुरक्षित हैं। उक्त भूमि पर लगे पेड़ों को नष्ट कर दिया, उस भूमि को समतल कर भूसा रखने के लिए गोदाम बनवा कर तालाबों से पानी आना बंद कर दिया है साथ ही पत्थर बेचकर शासन को हानि पहुंचा रहा है।खदान में डूबने से 12 वर्षीय बालिका एवं 40 वर्षीय महिला की मौत हो गई। जिसकी शिकायत की गई पर कोई कार्यवाही नहीं हुई। जिसे उन्होंने अनुचित बताते हुए न्यायालय से उचित राहत देने की प्रार्थना की।

सम्पादकीय

प्रधानमंत्री गद्दार नहीं

राहुल गांधी लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष हैं। दूसरा सबसे महत्वपूर्ण और संवैधानिक पद..! प्रोटोकॉल और राजनीति के लिहाज से नेता प्रतिपक्ष को छाया प्रधानमंत्री माना जाता है। प्रधानमंत्री के बाद नेता विपक्ष के संसदीय दल के पक्ष में ही सर्वाधिक जनादेश होता है, लिहाजा इस सम्मान, प्रतिष्ठा की गरिमा रखी जानी चाहिए, लेकिन देश के तीसरी बार निर्वाचित प्रधानमंत्री मोदी और गृहमंत्री अमित शाह को सार्वजनिक तौर पर गद्दार कहकर राहुल गांधी ने लाल लकीर पार कर दी है। जब प्रधानमंत्री मोदी विदेश में भारत का प्रतिनिधित्व कर रहे हों और नेता प्रतिपक्ष उन्हें गद्दार करार दें, तो भारत भी अपमानित हुआ है। प्रधानमंत्री कभी भी गद्दार नहीं हो सकते, क्योंकि उन्हें जनादेश हासिल है, बेशक आप उनका नीतिपरक विरोध कर सकते हैं। राहुल के गद्दार अपशब्द से देश की 147 करोड़ से अधिक आबादी भी अपमानित हुई है। यकीनन यह निंदनीय, शर्मनाक, असंसदीय, असवैधानिक और अमर्यादित अपशब्द है। हम भी मानते हैं और बराबर विश्लेषण कर रहे हैं कि देश में आर्थिक, तेल, खाद के संकट हैं, किल्लत है, लेकिन कोई आर्थिक तूफान आ रहा है, इससे हम सहमत नहीं हैं। यदि विपक्ष के नेता के तौर पर राहुल गांधी के भीतर गुस्सा, आक्रोश है, किसान, युवा, महिलाएं, मजदूर, छोटे व्यापारी वाकई रो रहे हैं, तो प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और आरएसएस को गद्दार की गाली देने के बजाय उन्हें जन-आंदोलन खड़ा करने का आह्वान करना चाहिए था। विपक्षी नेता राहुल गांधी वैकल्पिक आर्थिक हालात का प्रारूप देश के सामने पेश कर सकते थे, लेकिन वह तू-तड़ाक की भाषा पर उतर आए। राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री के लिए अपमानजनक भाषा में कहा- एक दिन प्रधानमंत्री टीवी पर आएगा और फिर रोयेगा। जिस तरह कोविड में रोया था, उसी तरह फिर रोयेगा और देश से माफी मांगेगा। यह एक राष्ट्रीय, लोकतांत्रिक नेता की भाषा नहीं है, बल्कि राहुल की सामंतवादी सोच ऐसा बुलवा रही है। इसी सोच के मद्देनजर उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के लिए चौकीदार चोर है जुमला 2019 में उछाला था। उस लोकसभा चुनाव में कांग्रेस किस रसातल तक लुढक आई थी, राहुल गांधी को आज भी याद होगा। देश के युवा प्रधानमंत्री मोदी को डंडे मारेंगे, यह भी सार्वजनिक बयान दिया था। राहुल ने प्रधानमंत्री को पनौती और सैनिकों के खून की दलाली करने वाला भी कहा था। राहुल की यह जुबान लगातार चुनाव हारने की कुंठा और हताशा हो सकती है, लेकिन नियंत्रण खुद राहुल गांधी को करना है। आज वह नेता प्रतिपक्ष हैं। कल ऐसे राजनीतिक समीकरण बन सकते हैं कि समूचा विपक्ष उन्हें प्रधानमंत्री का उम्मीदवार घोषित कर दे, लिहाजा उन्हें आदतन अपशब्दों के आचरण से बचना होगा और अपने व्यक्तित्व, बयानों, आह्वानों को गंभीर, तार्किक, देशहित में करना होगा। देश तभी उन्हें वैकल्पिक प्रधानमंत्री के रूप में देखना शुरू कर सकता है। सिर्फ मोदी-विरोध की नफरती सियासत से वह कभी भी प्रधानमंत्री नहीं बन सकते, यह हमारा मूल्यांकन और विश्लेषण है। कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने भी प्रधानमंत्री के लिए जहरीला सांप और 100 सिर वाला रावण अपशब्दों के इस्तेमाल किए थे। ऐसा कांग्रेस और उसके नेताओं के लिए आदतन नहीं है, दरअसल वे प्रधानमंत्री मोदी से नफरत करते हैं और 12 साल की सत्ता के बावजूद आपका प्रधानमंत्री करार देते हैं। राहुल गांधी ने यह भी कहा कि यदि संघ के लोग आपके पास आएं और मोदी-शाह की बात करें, तो उनसे कहिए कि आपके प्रधानमंत्री, गृहमंत्री और संगठन गद्दार हैं।

तपती धरती, झुलसता जीवन: हीटवेव की चुनौती

-: ललित गर्ग:-

वर्ष 2026 की गर्मी केवल एक मौसमीय घटना नहीं, बल्कि मानव सभ्यता के सामने खड़ी एक गंभीर चेतावनी बनकर सामने आई है। अप्रैल-मई के दौरान भारत सहित दक्षिण एशिया के अनेक हिस्सों में पड़ी रिकॉर्ड हीटवेव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि जलवायु परिवर्तन अब भविष्य का संकट नहीं, वर्तमान की भयावह वास्तविकता है। दिल्ली, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र और मध्य भारत के अनेक क्षेत्रों में तापमान 46 से 48 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया। कई शहरों में बिजली की मांग ने रिकॉर्ड तोड़ दिए। सड़कें सूनी दिखने लगीं, श्रमिकों का श्रम ठहरने लगा और बच्चों, बुजुर्गों तथा गरीब तबकों के सामने जीवन बचाने की चुनौती खड़ी हो गई। यह संकट अचानक नहीं आया। यह दशकों से प्रकृति के साथ किए गए असंतुलित व्यवहार, अंधाधुंध शहरीकरण, जंगलों की कटाई, संसाधनों के दोहन और सुविधावादी जीवनशैली का परिणाम है। प्रकृति ने बार-बार संकेत दिए, लेकिन विकास की अंधी दौड़ में हमने उन संकेतों को अनसुना किया। आज वही उपेक्षित चेतावनियां लू बनकर हमारे सामने खड़ी हैं। हीटवेव का सबसे बड़ा कारण केवल बढ़ता तापमान नहीं, बल्कि वह विकास मॉडल है जिसने धरती की प्राकृतिक ढाल को कमजोर कर दिया। जंगल सदियों से पृथ्वी के प्राकृतिक एयर कंडीशनर रहे हैं। वे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, वाष्पोत्सर्जन द्वारा वातावरण को शीतल रखते हैं और वर्षा चक्र को संतुलित बनाए रखते हैं। लेकिन विडंबना है कि विकास के नाम पर जंगलों का तेजी से विनाश हुआ। हर वर्ष लाखों हेक्टेयर वन क्षेत्र समाप्त हो रहे हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि स्थानीय स्तर पर तापमान बढ़ा, नमी कम हुई, वर्षा चक्र प्रभावित हुआ और गर्म हवाओं की अवधि लंबी होती गई। आज शहर ह्लकंक्रीट के जंगलह्व बन चुके हैं। महानगरों में हरित क्षेत्र सिकुड़ते जा रहे हैं और उनकी जगह सीमेंट, डामर और शीशे की ऊंची इमारतें ले रही हैं। इससे ह्लअर्बन हीट आइलैंडह्व प्रभाव तेजी से बढ़ा है। शहर अब आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में कई डिग्री अधिक गर्म हो चुके हैं। कंक्रीट दिनभर सूर्य की ऊष्मा को सोखता है और रात में धीरे-धीरे छोड़ता है। परिणामस्वरूप रातें भी गर्म होती जा रही हैं और शरीर को राहत नहीं मिल पाती। दिल्ली, मुंबई, जयपुर और लखनऊ जैसे शहरों में रात का तापमान पहले की तुलना में लगातार बढ़ रहा है। गरीब बस्तियों में स्थिति और भी गंभीर है। वहां न हरित क्षेत्र हैं, न पर्याप्त जल आपूर्ति, न शीतलन के साधन। टीन की छतों वाले घर दिन में भट्ठी बन जाते हैं। गर्मी की मार सामाजिक असमानता को और गहरा करती है। अमीर वर्ग एयर कंडीशनर और बंद कमरों में राहत खोज लेता है, लेकिन मजदूर, रिक्शाचालक, रेहड़ी वाले और निर्माण कार्य में लगे श्रमिक खुले आसमान के नीचे झुलसते रहते

हैं। विडंबना यह भी है कि गर्मी से राहत का सबसे लोकप्रिय साधन एयर कंडीशनर स्वयं संकट को बढ़ाने वाला कारक बनता जा रहा है। एक एयर कंडीशनर कमरे को ठंडा करता है, लेकिन बाहर उतनी ही गर्म हवा छोड़ता है। इसके साथ ही बिजली की खपत बढ़ती है, जिसका बड़ा हिस्सा अभी भी कोयला आधारित ऊर्जा से आता है। रेफ्रिजरेंट गैसें अतिरिक्त ग्रीनहाउस प्रभाव पैदा करती हैं। इस प्रकार एक दुष्चक्र निर्मित हो गया है-गर्मी बढ़ती है, एसी बढ़ते हैं, उत्सर्जन बढ़ता है और फिर गर्मी और बढ़ जाती है। जलवायु परिवर्तन का प्रभाव केवल तापमान तक सीमित नहीं है। यह कृषि, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य और अर्थव्यवस्था पर भी व्यापक असर डाल रहा है। वैज्ञानिक अध्ययनों से संकेत मिले हैं कि बढ़ती गर्मी और अनिश्चित मौसम के कारण गेहूं, धान और अन्य फसलों की उत्पादकता प्रभावित हो रही है। गर्म हवाएं पौधों की वृद्धि रोकती हैं, जल स्रोतों को सुखाती हैं और मिट्टी की उर्वरता को प्रभावित करती हैं। यदि यही स्थिति बनी रही तो आने वाले वर्षों में खाद्य संकट भी गहरा सकता है। स्वास्थ्य क्षेत्र पर भी इसका गंभीर प्रभाव दिख रहा है। लू लगना, निर्जलीकरण, हीट स्ट्रोक, हृदय रोग और मानसिक तनाव जैसी समस्याएं बढ़ रही हैं। अस्पतालों में गर्मी से जुड़ी बीमारियों के मरीजों की संख्या बढ़ रही है। सबसे अधिक खतरा बुजुर्गों, बच्चों, गर्भवती महिलाओं और बाहर काम करने वाले श्रमिकों को है। गर्मी का यह संकट सामाजिक और मानवीय संकट भी बन सकता है। जल स्रोतों के सूखने, कृषि संकट और जीवन परिस्थितियों के बिगड़ने से बड़े पैमाने पर पलायन बढ़ सकता है। जैव विविधता पर भी इसका गहरा प्रभाव पड़ रहा है। अनेक जीव-जंतु और वनस्पतियां अपने प्राकृतिक आवास खो रही हैं। हजारों प्रजातियों के अस्तित्व पर संकट मंडरा रहा है। ऐसी स्थिति में सरकारों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। केवल रेड अलर्ट और ऑरेंज अलर्ट जारी करना पर्याप्त नहीं है। हीटवेव को राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के प्रमुख विषय के रूप में स्वीकार करते हुए दीर्घकालिक नीतियां बनानी होंगी। सबसे पहले शहरों में हीट एक्शन प्लान को प्रभावी ढंग से लागू करना होगा। प्रत्येक शहर में हरित क्षेत्र बढ़ाने, जल संरक्षण, छायादार मार्ग, सार्वजनिक प्याऊ और शीतलन केंद्रों की व्यवस्था आवश्यक है। स्कूलों, कॉलेजों और कार्यस्थलों के समय निर्धारण में क्षेत्रीय तापमान को ध्यान में रखा जाना चाहिए। तीखी दोपहर में श्रमिकों के लिए कार्यावधि सीमित की जाए और उनके लिए विश्राम तथा पेयजल की व्यवस्था अनिवार्य हो। सरकार को भवन निर्माण नीति में भी परिवर्तन लाना होगा। पारंपरिक भारतीय वास्तुकला-हवादार घर, आंगन, मिट्टी आधारित निर्माण, हरित छतें और प्राकृतिक वेंटिलेशन को बढ़ावा देना चाहिए। कांच की चमचमाती इमारतों और ऊष्मा अवशोषित करने वाले निमार्णों पर पुनर्विचार की आवश्यकता है। ह्लकूल रूफह्व तकनीक, वर्षा जल संचयन और सौर ऊर्जा आधारित शीतलन प्रणाली को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। वन संरक्षण और वृक्षारोपण केवल अभियान नहीं, राष्ट्रीय प्राथमिकता बनना चाहिए। शहरों में माइक्रो फॉरेस्ट, पार्क और हरित गलियारों का निर्माण किया जाए। जल निकायों और पारंपरिक तालाबों को पुनर्जीवित किया जाए क्योंकि वे स्थानीय तापमान नियंत्रण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। लेकिन केवल सरकारें यह लड़ाई नहीं जीत सकतीं। आम जनता को भी अपनी भूमिका समझनी होगी। हमें उपभोगवादी जीवनशैली पर पुनर्विचार करना होगा। पानी का संयमित उपयोग, ऊर्जा की बचत, वृक्षारोपण, सार्वजनिक परिवहन का उपयोग और स्थानीय पर्यावरण संरक्षण अब व्यक्तिगत विकल्प नहीं, सामाजिक जिम्मेदारी हैं। भारतीय समाज में कभी सार्वजनिक प्याऊ, छायादार विश्राम स्थल और जल सेवा की समृद्ध परंपरा थी। गर्मियों में राहगीरों के लिए जल की व्यवस्था पुण्य कार्य माना जाता था। आज उस परंपरा को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है। समाज, धार्मिक संस्थाएं और स्वयंसेवी संगठन मिलकर जल सेवा और राहत कार्यों का अभियान चला सकते हैं। गर्मी और जल संकट को राजनीति का विषय बनाने के बजाय सहयोग और समाधान का विषय बनाना होगा। जल विवादों और संसाधनों पर स्वार्थपूर्ण राजनीति भविष्य को और कठिन बनाएगी। आवश्यकता इस बात की है कि जल प्रबंधन, पर्यावरण संरक्षण और जलवायु अनुकूलन को राष्ट्रीय सहमति का विषय बनाया जाए। वर्ष 2026 की यह झुलसाती गर्मी हमें चेतावनी दे रही है कि यदि हमने अभी भी प्रकृति के साथ संतुलन स्थापित नहीं किया तो आने वाले वर्षों में स्थिति और विकराल होगी। पृथ्वी का तापमान बढ़ेगा, जैव विविधता नष्ट होगी, खाद्य संकट गहराएगा और मानव जीवन अधिक कठिन हो जाएगा। यह समय प्रकृति से संघर्ष का नहीं, उसके साथ सामंजस्य का है। हमें विकास की ऐसी दिशा चुननी होगी जिसमें पर्यावरण, मानव जीवन और भविष्य सुरक्षित रह सके। अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब सूरज की तपिश केवल असुविधा नहीं, अस्तित्व का संकट बन जाएगी।

जैव विविधता संरक्षण : मानव अस्तित्व की सबसे बड़ी आवश्यकता

> पृथ्वी पर मौजूद विभिन्न जीव-जंतुओं, अनगिनत वनस्पतियों और पारिस्थितिक तंत्रों (इको-सिस्टम्स) के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 22 मई को अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस (इंटरनेशनल डे फॉर बायोलॉजिकल डायवर्सिटी) मनाया जाता है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी पर मौजूद जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों, सूक्ष्म जीवों तथा संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के प्रति आम लोगों में जागरूकता फैलाना है।

पृथ्वी पर मौजूद विभिन्न जीव-जंतुओं, अनगिनत वनस्पतियों और पारिस्थितिक तंत्रों (इको-सिस्टम्स) के संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 22 मई को अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस (इंटरनेशनल डे फॉर बायोलॉजिकल डायवर्सिटी) मनाया जाता है। वास्तव में इस दिवस को मनाने के पीछे का मुख्य उद्देश्य पृथ्वी पर मौजूद जीव-जंतुओं, पेड़-पौधों, सूक्ष्म जीवों तथा संपूर्ण पारिस्थितिक तंत्र के संरक्षण के प्रति आम लोगों में जागरूकता फैलाना है। जैव-विविधता केवल प्रकृति की सुंदरता ही नहीं, बल्कि मानव जीवन, भोजन, औषधि, जल, जलवायु संतुलन और आर्थिक विकास का आधार भी है। सरल शब्दों में कहें तो हमारी पृथ्वी पर जीवन का ताना-बाना जिन करोड़ों वनस्पतियों, जीव-जंतुओं और सूक्ष्मजीवों से मिलकर बना है, उसे ही हम जैव-विविधता (बायोडायवर्सिटी) कहते हैं।वास्तव में 'जैव-विविधता' क्रमश: दो शब्दों-'बायो' अर्थात जीव और 'डायवर्सिटी' अर्थात विविधता-से मिलकर बना है। साधारण शब्दों में कहें तो किसी निश्चित भौगोलिक क्षेत्र में पाए जाने वाले जीवों की संख्या और उनकी विविधता को ही जैव-विविधता कहा जाता है। कहना ग़लत नहीं होगा कि इसका संबंध(जैव-विविधता का संबंध) पौधों के प्रकार, प्राणियों तथा सूक्ष्म जीवाणुओं से है।सच तो यह है कि जैव-विविधता एक सजीव संपदा है और यह विकास यात्रा के लाखों वर्षों का परिणाम है।सरल शब्दों में कहें तो जैव-विविधता पृथ्वी पर जीवन की विविधता और परिवर्तनशीलता का प्रतिनिधित्व करती है। इसमें प्रजातियों की विविधता, पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता और प्रजातियों के भीतर आनुवांशिक विविधता शामिल होती है। यह पौधों, जानवरों, कवक और सूक्ष्मजीवों की विविधता के साथ-साथ उन पारिस्थितिक तंत्रों की विविधता को भी समाहित करती है, जिनमें कि वे निवास करते हैं। जैव-विविधता के प्रकारों में पारिस्थितिकीय तंत्र विविधता, प्रजाति विविधता, आनुवांशिक विविधता, कार्यात्मक विविधता तथा सांस्कृतिक विविधता को शामिल किया जाता है। दूसरे शब्दों में कहें तो जैव-विविधता किसी क्षेत्र में मौजूद विभिन्न प्रजातियों और उनके पारिस्थितिक तंत्र की विविधता है। हम यूं भी कह सकते हैं कि जैव-विविधता पृथ्वी

पर व्याप्त सभी जीव स्वरूपों यानी पादप और जंतुओं की जैविक विविधता है, जो उनकी जाति, आनुवांशिकी तथा पारिस्थितिकी में पाई जाती है।इस दिवस को मनाने के पीछे मुख्य उद्देश्य जैव-विविधता संरक्षण के प्रति वैश्विक जागरूकता बढ़ाना, विलुप्त होती प्रजातियों और नष्ट होते प्राकृतिक आवासों को बचाना, पर्यावरण और सतत विकास के बीच संतुलन स्थापित करना, लोगों को प्रकृति के साथ सामंजस्यपूर्ण जीवन के लिए प्रेरित करना तथा सरकारों, संस्थाओं और आम नागरिकों को संरक्षण कार्यों में सहभागी बनाना है। यहां पाठकों को बताता चलूं कि संयुक्त राष्ट्र महासभा ने 20 दिसंबर 2000 को 22 मई को 'अंतरराष्ट्रीय जैव-विविधता दिवस' के रूप में घोषित किया था, ताकि विश्वभर में जैव-विविधता संरक्षण के प्रति जागरूकता फैलाई जा सके और विश्व की जैव विविधताएँ सुरक्षित रह सकें। हर साल इस दिवस की एक थीम रखी जाती है और पिछले वर्ष यानी 2025 में इस दिवस की थीम 'प्रकृति के साथ सामंजस्य और सतत विकास' रखी गई थी, जबकि वर्ष 2026 की थीम-' स्थानीय स्तर पर कार्य, वैश्विक प्रभाव के लिए' निर्धारित की गई है। वास्तव में, यह थीम हमें यह याद दिलाती है कि जैव-विविधता संरक्षण केवल बड़े अंतरराष्ट्रीय समझौतों से संभव नहीं है, बल्कि स्थानीय समुदायों, युवाओं और आम नागरिकों के छोटे-छोटे प्रयास भी वैश्विक स्तर पर बड़ा प्रभाव डालते हैं। जब हम अपने आसपास के पर्यावरण, स्थानीय जलस्रोतों और स्थानीय प्रजातियों का संरक्षण करते हैं, तो उसका सकारात्मक असर पूरे विश्व के पारिस्थितिकी तंत्र पर पड़ता है।हाल फिलहाल, यदि हम यहां पर इस दिवस के इतिहास की बात करें तो 22 मई 1992 को नैरोबी में जैव विविधता सम्मेलन (कन्वेंशन आन बायोलोजिकल डायवर्सिटी) के मसौदे को स्वीकार किया गया था। 29 दिसंबर 1992 को संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में आयोजित जलवायु सम्मेलन में जैव-विविधता पर विश्व का ध्यान केंद्रित हुआ और वैश्विक स्तर पर इसे मनाने का निर्णय लिया गया। गौरतलब है कि प्रारंभ में इसे 29 दिसंबर को मनाया जाता था, लेकिन बाद में वर्ष 2000 में इसे बदलकर 22 मई कर दिया गया, ताकि इसमें विश्व के और अधिक देशों की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इतना ही नहीं, पहले इसे 29 मई को मनाने का विचार भी रखा गया था, लेकिन अंतत: 22 मई पर सहमति बनी और तभी से पूरी दुनिया में इसे मनाने की परंपरा शुरू हुई। भारत के संदर्भ में भी यह दिवस अत्यंत महत्वपूर्ण है। 22 मई 2002 को भारत सरकार ने संसद में ऐतिहासिक 'जैव-विविधता अधिनियम, 2002' को आगे बढ़ाने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए, जिसने भारत की पारंपरिक प्राकृतिक संपदा को अंतरराष्ट्रीय जैव-चोरी से बचाने के लिए कानूनी सुरक्षा प्रदान की। हाल फिलहाल,यहां पर यह बात कहना ग़लत नहीं होगा कि जैव-विविधता सीधे तौर पर मानव अस्तित्व की बुनियादी आवश्यकता है।सच तो यह है कि हमारी थाली का भोजन और अधिकांश जीवनरक्षक दवाइयाँ प्राकृतिक वनस्पतियों और जीवों की ही देन हैं। पाठकों को बताता चलूं कि मानव भोजन का लगभग 80 प्रतिशत भाग पौधों से प्राप्त होता है तथा लगभग 3 अरब लोगों के लिए मछली प्रमुख प्रोटीन स्रोत है। पेड़-पौधे कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित कर ऑक्सीजन प्रदान करते हैं, जबकि मधुमक्खियाँ और अन्य परागणकर्ता फसलों के परागण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाकर कृषि उत्पादन बढ़ाते हैं।

(यह लेखक के अपने निजी विचार है)

भाषाई विवाद और क्षेत्रीय असंतुलन स्वतंत्र भारत की बड़ी चुनौती

भारत विविधताओं का देश है। यहाँ धर्म, भाषा, जाति, संस्कृति और परंपराओं की बहुलता सदियों से समाज की पहचान रही है। यही विविधता भारत की शक्ति भी है और जब इसका दुरुपयोग राजनीतिक तथा सामाजिक स्वार्थों के लिए होने लगे, तब यही विविधता राष्ट्र के आर्थिक और सामाजिक विकास में अवरोध बन जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने लोकतांत्रिक व्यवस्था के माध्यम से आर्थिक प्रगति और सामाजिक न्याय का सपना देखा था, किंतु सामाजिक विषमताएँ, जातीय संघर्ष, सांप्रदायिक तनाव, भाषाई विवाद और क्षेत्रीय असंतुलन आज भी विकास के मार्ग में गंभीर चुनौतियों के रूप में उपस्थित हैं। आजादी के बाद देश ने पंचवर्षीय योजनाओं, औद्योगिक विकास, कृषि सुधारों और सामाजिक उत्थान की अनेक योजनाओं के माध्यम से आर्थिक प्रगति का मार्ग प्रशस्त करने का प्रयास किया। उद्देश्य यह था कि समाज के प्रत्येक वर्ग को विकास की मुख्यधारा से जोड़ा जाए और वर्गविहीन, लोकतांत्रिक तथा धर्मनिरपेक्ष समाज की स्थापना हो। किंतु सामाजिक संरचना में विद्यमान असमानताओं ने विकास की गति को कई स्तरों पर प्रभावित किया।

जातिगत विभाजन और वर्ग संघर्ष ने सामाजिक समरसता को कमजोर किया तथा राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं ने इन विभाजनों को और अधिक जटिल बना दिया। भारतीय राजनीति में जातिगत समीकरण लंबे समय से सत्ता प्राप्ति का माध्यम बनते रहे हैं। राजनीतिक दलों ने सामाजिक न्याय और समानता के नाम पर अनेक बार जातीय ध्रुवीकरण को बढ़ावा दिया, जिससे समाज में परस्पर अविश्वास की भावना उत्पन्न हुई। उच्च वर्ग और निम्न वर्ग के बीच आर्थिक तथा सामाजिक दूरी ने कई बार संघर्ष का रूप लिया। यही कारण है कि कई क्षेत्रों में नक्सलवाद जैसी हिंसक प्रवृत्तियों को पनपने का अवसर मिला। हालांकि अब नक्सलवाद का देश से लगभग सफाया हो गया है। समाज का कोई वर्ग स्वयं को विकास की मुख्यधारा से अलग महसूस करता है, तब असंतोष जन्म लेता है और यही असंतोष अंतत: राष्ट्रीय विकास के लिए बाधक बन जाता है। धार्मिक संघर्ष भी भारत के सामाजिक ताने-बाने के लिए गंभीर चुनौती बनकर उभरे हैं। हिंदू-मुस्लिम विवादों की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि ने समय-समय पर सामाजिक तनाव को जन्म दिया है। मंदिर-मस्जिद विवाद जैसे मुद्दे केवल धार्मिक असहमति तक सीमित नहीं रहते, बल्कि उनका प्रभाव देश की सामाजिक शांति, निवेश, उद्योग और आर्थिक वातावरण पर भी पड़ता है। सांप्रदायिक तनाव के कारण समाज में भय और असुरक्षा का वातावरण निर्मित होता है, जिससे विकास की प्रक्रिया प्रभावित होती है। किसी भी राष्ट्र की आर्थिक उन्नति के लिए सामाजिक स्थिरता अत्यंत आवश्यक होती है। भाषाई विवाद भी स्वतंत्र भारत की एक बड़ी चुनौती रहे हैं। दक्षिण भारत में हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाए जाने के विरोध से लेकर विभिन्न राज्यों में क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण के आंदोलनों तक, भाषा का प्रश्न कई बार राजनीतिक और सामाजिक संघर्ष का कारण बना।

बंगाल, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, आंध्र प्रदेश और अन्य राज्यों में भाषाई अस्मिता को लेकर समय-समय पर आंदोलन हुए हैं। भाषा किसी भी समाज की सांस्कृतिक पहचान होती है, इसलिए इस विषय को संवेदनशीलता और समन्वय के साथ देखने की आवश्यकता है। भाषाई संघर्ष जब राजनीतिक रूप धारण कर लेते हैं, तब वे राष्ट्रीय एकता और आर्थिक विकास दोनों को प्रभावित करते हैं। समान नागरिक संहिता जैसे मुद्दों पर भी समाज में मतभेद दिखाई देते हैं। एक ओर बहुसंख्यक वर्ग इसे समानता और राष्ट्रीय एकरूपता का प्रतीक मानता है, वहीं अल्पसंख्यक समुदाय अपनी धार्मिक और सांस्कृतिक पहचान को लेकर आशंकित दिखाई देता है। ऐसे विषयों पर संवाद, संवेदनशीलता और संवैधानिक संतुलन की आवश्यकता है। किसी भी लोकतांत्रिक राष्ट्र में विकास तभी संभव है जब सभी वर्ग स्वयं को सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें। भारत के समक्ष गरीबी, बेरोजगारी, भूखमरी, नक्सलवाद, आतंकवाद, सांप्रदायिकता और क्षेत्रीय विघटनकारी प्रवृत्तियाँ आज भी गंभीर समस्याएँ बनी हुई हैं। स्वतंत्रता के 78 वर्षों बाद भी यदि समाज का एक बड़ा वर्ग मूलभूत सुविधाओं से वंचित है, तो यह चिंतन का विषय है।

(यह लेखक के अपने निजी विचार है)

मोदी-मेलोनी की मेलोडी डिप्लोमेसी — मुस्कान बनी मैसेज, मिठास बनी मैप

रोम की ऐतिहासिक प्राचीरों के साए में जब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इटली की प्रधानमंत्री जॉर्जिया मेलोनी को 'मेलोडी' टॉफी का पैकेट भेंट किया, तो दुनिया ने सिर्फ एक मीठा पल नहीं, बल्कि वैश्विक विश्व व्यवस्था में भारत की बढ़ती ताकत और प्रभाव का स्पष्ट संकेत देखा। यह 'मेलोडी' डिप्लोमेसी महज वायरल सेल्फी या कोलोसियम की सैर नहीं थी। यह दो मजबूत राष्ट्रवादियों के बीच उस रणनीतिक गठबंधन की शुरुआत थी, जो यूरोप के मध्य में भारत को नया द्वार खोल रहा है। जबकि विपक्ष 'टॉफी डिप्लोमेसी' पर तंज कस रहा है, हकीकत यह है कि मोदी की इस यात्रा ने भारत-इटली संबंधों को 'स्पेशल स्ट्रैटेजिक पार्टनरशिप' स्तर पर ऊंचा उठा दिया है। पुरानी कांग्रेस संस्कृति की 'चाय पी लो' वाली आलोचना अब पुरानी पड़ चुकी है।

वैश्विक कूटनीति के बदलते परिदृश्य के बीच इस दौरे में दोनों देशों ने संयुक्त 'जॉइंट स्ट्रैटेजिक एक्शन प्लान 2025-2029' की समीक्षा की और कई ठोस आउटकम्स/एम.ओ.यूज़ पर सहमति जताई। द्विपक्षीय व्यापार को 2029 तक 20 बिलियन यूरो तक पहुंचाने का लक्ष्य तय किया गया। रक्षा उद्योग सहयोग, क्रिटिकल मिनरल्स, समुद्री परिवहन, कृषि, उच्च शिक्षा, नर्स भर्ती और आयुर्वेद जैसे क्षेत्रों में व्यावहारिक समझौते हुए।

सबसे महत्वपूर्ण, भारत-मध्य पूर्व-यूरोप आर्थिक गलियारे (आईएमईसी) को नई गति मिली। इटली भूमध्य सागर का अहम प्रवेश द्वार है, जिससे यह साझेदारी भारत की 'एक्ट ईस्ट' नीति को 'एक्ट वेस्ट' की दिशा में भी मजबूत आधार देती है। जबकि विपक्ष 'मेलोडी' पर व्यंग्य कर रहा है, वास्तविकता यह है कि मोदी-मेलोनी ने दीर्घकालिक रणनीतिक साझेदारी की ठोस नींव रखी है। यह यात्रा महज द्विपक्षीय नहीं, बल्कि बहुपक्षीय महत्व की है। दोनों नेताओं ने वैश्विक मुद्दों पर खुलकर चर्चा की। चीन के बढ़ते आक्रामक रवैये, ऊर्जा सुरक्षा और आपूर्ति श्रृंखला की विविधता पर सहमति बनी। दोनों देशों ने एक्शन प्लान की समीक्षा के लिए विदेश मंत्रियों के नेतृत्व वाले एक मैकेनिज़्म के गठन पर सहमति जताई है। यह संस्थागत मजबूती की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। मेलोनी की सरकार मजबूत राष्ट्रवादी रुख के साथ अवैध प्रवासन और यूरोपीय संप्रभुता पर सख्त नीति अपनाती है, जबकि मोदी की 'आत्मनिर्भर भारत' और मेलोनी की 'इटली फर्स्ट' सोच में स्पष्ट समानता दिखती है। दोनों ने साफ संदेश दिया कि लोकतंत्र और राष्ट्रवाद की नींव पर खड़े देश एक-दूसरे के साथ खड़े हो सकते हैं, वैश्विक संतुलन को नई दिशा दे सकते हैं। यह वह सोच है जिससे कांग्रेस और उसके गठबंधन वाले हमेशा कतराते रहे। वे तो अभी भी 'चीन भाई-चीन' वाली पुरानी लीक पर अटके हैं। इतिहास के पन्नों में यह यात्रा केवल राजनीतिक नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जुड़ाव की एक सशक्त मिसाल के रूप में दर्ज हुई। कोलोसियम में संयुक्त भ्रमण, राजकीय रात्रिभोज, गार्ड ऑफ ऑनर और मेलोनी द्वारा हिंदी कहावत 'परिश्रम ही सफलता की कुंजी है' का उल्लेख—ये सभी क्षण दोनों देशों के बीच बढ़ती आत्मीयता को दर्शाते हैं। इटली में भारतीय समुदाय की उपस्थिति और सक्रियता लगातार मजबूत हो रही है, जिससे शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यटन जैसे क्षेत्रों में नए अवसरों के द्वार खुल रहे हैं। भले ही कुछ लोग सांस्कृतिक कूटनीति को कम आँकते हों, पर वास्तविकता यह है कि सॉफ्ट पावर के बिना वैश्विक प्रभाव अधूरा रहता है, और इसी संतुलन को प्रधानमंत्री मोदी ने प्रभावी ढंग से आगे बढ़ाया है। भारत और यूरोप के बीच आर्थिक रिश्ते अब नए विस्तार की दिशा में तेज़ी से आगे बढ़ रहे हैं। लगभग 16.77 बिलियन डॉलर के व्यापार आधार के साथ यह साझेदारी निवेश, तकनीक और संयुक्त उत्पादन को नई ऊर्जा दे रही है। रक्षा क्षेत्र में सह-उत्पादन के अवसर मजबूत हो रहे हैं, वहीं स्वच्छ ऊर्जा और एआई जैसे भविष्य-केंद्रित क्षेत्रों में सहयोग भारत को यूरोपीय तकनीकी क्षमता से और अधिक जोड़ रहा है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला को चीन से अलग करने की चल रही कोशिशों के बीच भारत की रणनीतिक भूमिका लगातार बढ़ी है। प्रधानमंत्री मोदी की दूरदर्शी नीति ने इस परिवर्तन में भारत को निर्णायक स्थिति में ला खड़ा किया है, जबकि विपक्ष अब भी बड़े आर्थिक दृष्टिकोण की बजाय सीमित मुद्दों तक ही सिमटा दिखाई देता है। विपक्ष की आलोचना इस दौर की एक चिंताजनक सच्चाई बनकर सामने आती है। राहुल गांधी जैसे नेता जब 'टॉफी डिप्लोमेसी' पर व्यंग्य करते हैं, तो वे देश की गरिमा और विदेश नीति की गंभीरता को कमजोर करते प्रतीत होते हैं।

(यह लेखक के अपने निजी विचार है)

संभागायुक्त धनंजय सिंह की अध्यक्षता में पेंच टाइगर रिजर्व की स्थानीय सलाहकार समिति की बैठक सम्पन्न

पेंच टाइगर रिजर्व में पर्यटन प्रबंधन और पर्यटन व्यवस्थाओं का किया गया अनुश्रवण

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

संभागायुक्त श्री धनंजय सिंह की अध्यक्षता में विगत दिन पेंच टाइगर रिजर्व की स्थानीय सलाहकार समिति की बैठक खवासा में आयोजित की गई। बैठक में समिति के सदस्य गण विधायक विधानसभा क्षेत्र बरघाट, विधायक विधानसभा क्षेत्र चौरई, कलेक्टर सिवनी,कलेक्टर छिंदवाड़ा, वन मण्डलाधिकारी सिवनी/छिंदवाड़ा तथा क्षेत्र संचालक एवं सदस्य सचिव श्री देवा प्रसाद वा अन्य सदस्य गण उपस्थित रहे। बैठक में क्षेत्र संचालक द्वारा पेंच टाइगर रिजर्व सिवनी भौगोलिक स्थिति कार्यक्षेत्र एवं संरचना जानकारी दी गई। वन विभाग मंत्रालय भोपाल द्वारा जारी राजपत्र दिनाँक 27 अगस्त 2021 में उल्लिखित महत्पूर्ण बिंदुओं/प्रावधानों को क्षेत्र संचालक द्वारा प्रस्तुतीकरण के माध्यम से अवगत कराते हुए बताया कि टाइगर रिजर्व के बफर जोन की 5 ¹ की सीमाओं के भीतर स्थित ग्रामों के मान्यता प्राप्त शिक्षण संस्थाओं के छात्रों की अध्ययन यात्राएं अथवा इको विकास समितियों के सदस्यों की प्राधिकृत अध्ययन यात्राओं को निशुल्क कराया जाता है। ताकि छात्र पर्यावरण एवं वन संरक्षण के प्रति जागरूक हो सकें। इसी प्रकार विभिन्न राज्यों के वन विभागों के प्रशिक्षण एवं अनुसंधान संस्थानों के छात्रों, प्रशिक्षुओं, अनुदेशकों और सहायक कमार्चारियों की भी प्राधिकृत अध्ययन यात्राएं कराई जाती हैं। इस राजपत्र अनुसार संरक्षित क्षेत्र के भारसाधक अधिकारी/पार्क प्रबंधन द्वारा संरक्षित क्षेत्र के भीतर पयर्टन के प्रयोजनों हेतु वाहनों के पंजीकरण, पर्यटन वाहन क्षमता, क्षेत्र में पर्यटकों के भ्रमण के रुझान, नवीन पर्यटन जोन की उपलब्धता के आधार पर एवं स्टेकहोल्डरों से चर्चा पश्चात पंजीकृत वाहनों की संख्याँ, पंजीकृत पर्यटक वाहनों की रोस्टर पद्धति आदि विनिश्चित किए जाने का प्रावधान है। इसके अनुक्रम में वर्तमान में कुल 342 पर्यटक वाहन पंजीकृत हैं। क्षेत्र संचालक द्वारा बताया गया कि पर्यटन वर्ष प्रारंभ होने के पूर्व सभी पंजीकृत वाहनों के फिटनेस एवं वाहन तथा वाहन चालक हेतु निर्धारित न्यूनतम अहताकारी मानक के आधार पर परीक्षण कराए जाने का प्रावधान है। इस पर समिति द्वारा विभागीय निर्देश/परिपत्र के तहत सभी पंजीकृत पर्यटन वाहनों के फिटनेस आदि की नियमानुसार परीक्षण कार्यवाही कराए जाने एवं वन विभाग द्वारा पर्यटन गतिविधियों में उपयोग होने वाले वाहनों के लिए निर्धारित मानकों एवं दिशा निदेर्शों का पालन भी नियमानुसार अनिवार्य रूप से सुनिश्चित किए जाने का निर्णय लिया गया। इससे संरक्षित वन क्षेत्रों में पर्यटन गतिविधियों का बेहतर संचालन सुनिश्चित होगा तथा पर्यटकों को सुरक्षित, व्यवस्थित और गुणवत्तापूर्ण सुविधाएं उपलब्ध हो सकेंगी। स्थानीय लोगों को रोजगार के ज्यादा अवसर मिल सके इस पर भी ध्यान देना चाहिए। बैठक के अंत संभागायुक्त द्वारा माननीय विधायक गणों तथा अन्य सभी सदस्यों से पेंच टाइगर रिजर्व में पर्यटन प्रबंधन और पर्यटन व्यवस्थाओं को और अधिक सुव्यवस्थित करने के संबंध मे विचार विमर्श के पश्चात विभागीय अधिकारियों को निर्देशित किया कि पर्यटन प्रबंधन एवं अन्य आवश्यक व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में विभागीय दिशा निर्देश/ नियमों का प्रभावी क्रियान्वयन सुनिश्चित करें।

दो सत्रों में 24 मई को होगी यूपीएससी प्रारंभिक परीक्षा

परीक्षा की तैयारियों को लेकर बैठक सम्पन्न

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

संघ लोक सेवा आयोग की 24 मई को आयोजित होने वाली सिविल सर्विसेज (प्रारंभिक) परीक्षा 2026 के सफल संचालन के लिए परीक्षा संबंधी व्यवस्थाओं को लेकर आज कलेक्ट्रेट सभा कक्ष में वेन्यू सुपरवाइजर्स, सहायक सुपरवाइजर्स एवं लोकल इंस्पेक्टिंग ऑफिसर्स (एलआईओ) की बैठक आयोजित की गई। बैठक में यूपीएससी के ऑब्जर्वर श्री ओ पी हितैषी, जिला नोडल अधिकारी एवं डिप्टी कलेक्टर रघुवीर सिंह मरावी, परीक्षा समन्वयक डॉ. प्रमोद श्रीवास्तव सहित संबंधित अधिकारी उपस्थित रहे। बैठक में बताया गया कि संघ लोक सेवा आयोग की सिविल सर्विसेज प्रारंभिक परीक्षा के लिए शहर में 17 परीक्षा केंद्रों बनाये जा रहे हैं। परीक्षा में कुल 5 हजार 425 अभ्यर्थी शामिल होंगे। परीक्षा 24 मई को दो सत्रों में आयोजित होगी। प्रथम सत्र प्रातः 9:30 बजे से 11:30 बजे तक तथा द्वितीय सत्र दोपहर 2:30 बजे से 4:30 बजे तक आयोजित किया जाएगा। परीक्षा के सफल संचालन हेतु प्राध्यापकों को वीक्षण कार्य एवं तहसीलदार तथा नायब तहसीलदारों को सहायक कोऑर्डिनेशन सुपरवाइजर की जिम्मेदारी सौंपी गई है। बैठक में सभी 17 परीक्षा केंद्रों से संबंधित शैक्षणिक संस्थाओं के प्राचार्य भी मौजूद थे।

टेबल टेनिस प्रशिक्षण से विद्यार्थियों की बढ़ी एकाग्रता, एमपी पावर के ग्रीष्मकालीन शिविर में बेटियों की बढ़ी भागीदारी

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

एमपी पावर मैनेजमेंट कंपनी लिमिटेड की केंद्रीय क्रीड़ा एवं कला परिषद के तत्वावधान में मशाल परिसर में आयोजित ग्रीष्मकालीन टेबल टेनिस प्रशिक्षण शिविर बच्चों और युवाओं के लिए केवल खेल सीखने का मंच नहीं, बल्कि मानसिक एकाग्रता और आत्मविश्वास बढ़ाने का प्रभावी माध्यम बनता जा रहा है। शिविर में भाग ले रहे विद्यार्थियों का कहना है कि टेबल टेनिस के नियमित अभ्यास से उनकी एकाग्रता, निर्णय क्षमता और आत्मअनुशासन में उल्लेखनीय सुधार देखने को मिला है। इस वर्ष आयोजित प्रशिक्षण शिविर में लगभग 30 छात्र-छात्राएं भाग ले रहे हैं, जिनमें 20 लड़कियां शामिल हैं। लड़कियों की यह बढ़ती सहभागिता खेलों के प्रति बदलती सोच और बढ़ते उत्साह का सकारात्मक संकेत मानी जा रही है। शिविर में भाग लेने वाली छात्राओं ने कहा कि खेल के माध्यम से उन्हें आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक भावना विकसित करने का अवसर मिल रहा है। एमपी पावर की केंद्रीय क्रीड़ा एवं कला परिषद के महासचिव फिरोज कुमार मेश्राम ने शिविर का निरीक्षण कर खिलाड़ियों का उत्साहवर्धन किया। उन्होंने कहा कि खेल केवल शारीरिक विकास का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानसिक मजबूती, अनुशासन और टीम भावना भी विकसित करता है। उन्होंने नवोदित खिलाड़ियों को नियमित अभ्यास और समर्पण के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। प्रातःकालीन सत्र में एमपी पावर के वरिष्ठ खिलाड़ी हितेश परमार, पंकज खत्री और सुरेंद्र इंगले खिलाड़ियों को प्रशिक्षण दे रहे हैं। अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा विद्यार्थियों को टेबल टेनिस की तकनीकी बारीकियों जैसे सर्विस, बैक हैंड, पुश, चॉप, शॉट और टॉप स्पिन का अभ्यास कराया जा रहा है। प्रशिक्षण के दौरान खिलाड़ियों को खेल की रणनीति और मैच के दौरान मानसिक संतुलन बनाए रखने की भी जानकारी दी जा रही है। प्रशिक्षकों का कहना है कि कई विद्यार्थियों ने बेहद कम समय में खेल की तकनीकों को तेजी से सीखा है और उनमें प्रतियोगी स्तर पर बेहतर प्रदर्शन करने की क्षमता दिखाई दे रही है। नियमित अभ्यास और सही मार्गदर्शन से ये खिलाड़ी भविष्य में जिला, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर सकते हैं। शिविर में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों ने बताया कि उन्हें पहली बार इतने व्यवस्थित तरीके से पेशेवर प्रशिक्षण मिल रहा है। इससे उनके खेल में काफी सुधार आया है और अब वे प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए पहले से अधिक आत्मविश्वास महसूस कर रहे हैं। खिलाड़ियों में मैच टेम्परामेंट विकसित करने के उद्देश्य से प्रतिदिन प्रशिक्षण के बाद अभ्यास मैच भी आयोजित किए जा रहे हैं। इन मुकाबलों के माध्यम से खिलाड़ियों को वास्तविक प्रतियोगिता जैसी परिस्थितियों में खेलने का अनुभव मिल रहा है, जिससे उनकी मानसिक तैयारी और खेल कौशल दोनों मजबूत हो रहे हैं।

जबलपुर-पुणे-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन का नियमित नम्बर से परिचालन

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

रेल प्रशासन द्वारा यात्रियों की सुविधा एवं उनकी मांग पर संचालित गाड़ी संख्या 02132/02131 जबलपुर-पुणे-जबलपुर साप्ताहिक स्पेशल ट्रेन को अब गाड़ी संख्या 20162/20161 जबलपुर-पुणे-जबलपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस के रूप में नियमित नंबर से चलाने का निर्णय लिया गया है। यह ट्रेन जबलपुर से 24 मई 2026 और पुणे से 25 मई 2026 से नियमित नम्बर से परिचालन किया जाएगा। गाड़ी संख्या 20162 जबलपुर-पुणे साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन 24 मई से प्रत्येक रविवार को जबलपुर से दोपहर 13:50 बजे प्रस्थान कर मदनमहल 14:00 बजे, नरसिंहपुर 14:58 बजे, पिपरिया 16:03 बजे, इटारसी 17:20 बजे, हरदा 18:16 बजे, बुरहानपुर 20:45 बजे, भुसावल 21:45 बजे, पहुँचकर अगले दिन मनमाड़ पर मध्यरात्रि 00:10 बजे, कोपरगाँव 01:12 बजे, बेलापुर 01:57 बजे, अहिल्यानगर 02:57 बजे तथा दौड़ कॉर्ड लाइन पर 04:33 बजे ठहराव लेते हुए सोमवार को पुणे सुबह 06:25 बजे पहुँचेगी। इसी प्रकार वापसी में गाड़ी संख्या 20161 पुणे-जबलपुर साप्ताहिक एक्सप्रेस ट्रेन 25 मई से प्रत्येक सोमवार को पुणे से 11:20 बजे प्रस्थान कर दौड़ कॉर्ड लाइन पर 12:20 बजे, अहिल्यानगर पर 13:32 बजे, बेलापुर पर 14:37 बजे, कोपरगाँव 15:27 बजे, मनमाड़ 17:10 बजे, भुसावल 20:00 बजे, बुरहानपुर 20:31 बजे, पहुँचकर अगले दिन हरदा पर मध्य रात्रि 00:13 बजे, इटारसी पर 02:00 बजे, पिपरिया पर 03:18 बजे, नरसिंहपुर 04:28 बजे तथा मदनमहल पर 05:38 बजे ठहराव लेते हुए मंगलवार को जबलपुर सुबह 06:00 बजे पहुँचेगी। दिनाँक 24 मई 2026 से 28 जून 2026 तक कोच संरचनाः- इस गाड़ी में 02 वातानुकूलित द्वितीय श्रेणी, 05 वातानुकूलित तृतीय श्रेणी, 08 शयनयान श्रेणी एवं 02 एसएलआरडी सहित कुल 17 कोच रहेंगे।

महिला द्वारा लगाए गए आरोप से बंग समाज आक्रोशित

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

पवित्र और प्राचीन काली बाड़ी खमरिया पर विगत कुछ दिनों पहले एक महिला द्वारा अत्यंत गंभीर आरोप लगाते हुए सोशल मीडिया के माध्यम से संपूर्ण देश और शहर में प्रचारित करने का मामला अब गरमाते जा रहा है। इस संबंध में शुक्रवार को सिटी बंगाली क्लब जबलपुर में शहर की सभी काली मंदिर एवं दुर्गा पूजा समिति के सभी सदस्य एकत्रित हुए। बैठक सिटी बंगाली क्लब के सचिव प्रकाश शाह, तृष्णा चैटर्जी, दीपांकर बैनर्जी जी के अध्यक्षता में हुई। बैठक के आरम्भ में काली बाड़ी खमरिया के सचिव अर्नब दास गुप्ता ने संपूर्ण घटनाक्रम के बारे में उपस्थित सदस्यों को जानकारी दी, जिसके बाद सभी ने एक मतीन फैसला किया कि पवित्र काली मंदिर पर इतने घिनौने और झूठे आरोप सहने योग्य नहीं है, लिहाजा इस पर कानूनी कार्यवाही अत्यंत आवश्यक है ये न केवल बंग समाज पर आक्रमण है अपितु बंग समाज को गैर हिंदू बता कर संपूर्ण बंग समाज को बनाम करने की साजिश की जा रही है।

एसपी को ज्ञापन आज :

बंग समाज ने इस बात कि शिकायत स्थानीय पुलिस थाना खमरिया को देने के बाद भी अभी तक कोई कार्यवाही नही हुई। घटना के विरोध में आज दोपहर 12 बजे एसपी जबलपुर को ज्ञापन सोपा जाएगा।

यह रहे उपस्थित :

इस बैठक में समाज के प्रतिष्ठित तृष्णा चटर्जी, उत्तम नाग, मनोतोष दत्त, प्रकाश साहा, डी के रॉय, एडवोकेट राणा भट्टाचार्य, दीपांकर बनर्जी, सुब्रत सोम, दीपक गुहा, एसपी धर, गौतम बागची, प्रसंजीत चटर्जी, सुजीत भट्ट, एम भट्टाचार्य के साथ साथ काफी संख्या में समाज के लोग उपस्थित रहे।

निगमायुक्त को मिला जेसीटीएसएल के प्रभारी कार्यकारी निदेशक का अतिरिक्त प्रभार

प्रभारी कार्यकारी निदेशक का कार्य भी संभालेंगे निगमायुक्त अहिरवार

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

मध्य प्रदेश शासन के परिवहन विभाग द्वारा जारी नवीनतम आदेश के तहत, जबलपुर नगर निगम के आयुक्त रामप्रकाश अहिरवार को उनके वर्तमान दायित्वों के साथ-साथ जबलपुर सिटी ट्रांसपोर्ट सर्विसेस लिमिटेड के प्रभारी कार्यकारी निदेशक का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। परिवहन विभाग, मंत्रालय वल्लभ भवन, भोपाल द्वारा जारी आदेश के अनुसार, मध्य प्रदेश यात्री परिवहन एंड इंफ्रास्ट्रक्चर लिमिटेड राज्य स्तरीय होल्डिंग कंपनी के अधीन संचालित क्षेत्रीय सहायक कंपनी जेसीटीएसएल के निदेशक मंडल का पुनर्गठन किया गया है। शासन द्वारा कार्य सुविधा की दृष्टि से और शहर के लोक परिवहन को सुचारू रूप से संचालित करने हेतु यह जिम्मेदारी सीधे निगमायुक्त श्री अहिरवार को दी गई है। नगर निगम और जेसीटीएसएल के मध्य बेहतर समन्वय स्थापित होने से शहर की यातायात व्यवस्था अधिक सुगम और यात्री-अनुकूल बनेगी। बसों के समयबद्ध संचालन और नए रूटों के विस्तार को गति मिलेगी।

स्वच्छ पेयजल आपूर्ति करने कई वार्डो में चला निगम का लीकेज सुधार अभियान

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

नागरिकों को सुचारू और निर्बाध पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नगर निगम पूरी तरह मुस्तैद है। इसी कड़ी में आज निगमायुक्त रामप्रकाश अहिरवार के निदेर्शानुसार शहर के विभिन्न क्षेत्रों में बड़े स्तर पर अभियान चलाकर पाइप लाइन लीकेज सुधार का कार्य किया गया। इस संबंध में अधीक्षण यंत्री कमलेश श्रीवास्तव ने बताया कि राजीव गांधी वार्ड शांति नगर अंतर्गत गली नंबर 21 में आभा मेडिकोज के पास लंबे समय से हो रहे पाइप लाइन लीकेज को नगर निगम की टीम ने पूरी तत्परता से दुरुस्त किया। व्यापारिक और व्यस्त क्षेत्र अंधेरदेव में एम.पी. स्पोर्ट शॉप के बाजू वाली गली में मुख्य पाइप लाइन का सुधार कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण किया गया। सरदार वल्लभ भाई पटेल वार्ड संभाग क्रमांक 1 के अंतर्गत होटल सत्यरक्षा के समीप आ रही जलप्रदाय की समस्या को दूर करते हुए पाइप लाइन को ठीक किया गया।

वार्डों में पहुँच रही नगर निगम की जल चौपाल मौके पर ही हो रहा पानी की समस्याओं का समाधान

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

शहर के नागरिकों को सुचारू पेयजल आपूर्ति सुनिश्चित करने के लिए नगर निगम द्वारा पहल की जा रही है। महापौर जगत बहादुर सिंह अन्नू एवं निगमायुक्त रामप्रकाश अहिरवार के निदेर्शानुसार शहर के विभिन्न क्षेत्रों में वार्डवार जल चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। अधीक्षण यंत्री कमलेश श्रीवास्तव ने बताया कि आज संभाग क्रमांक 16 के अंतर्गत आने वाले संजय गांधी वार्ड में जल चौपाल का आयोजन किया गया। इस चौपाल में स्थानीय पार्षद श्रीमती मधुबाला सिंह,कार्यपालन यंत्री कमलेश श्रीवास्तव और नगर निगम के अन्य संबंधित अधिकारी व कर्मचारी मुख्य रूप से उपस्थित रहे। चौपाल के दौरान अधिकारियों ने क्षेत्र के नागरिकों से सीधा संवाद किया, पानी की आपूर्ति की स्थिति का जायजा लिया।

सुबह सफाई निरीक्षण के बाद

निगमायुक्त द्वारा वॉटर, सीवर, ई-के.व्हाय.सी., और स्वास्थ्य विभाग के कार्यो की समीक्षा की गयी

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

निगमायुक्त रामप्रकाश अहिरवार द्वारा सुबह सफाई व्यवस्था का निरीक्षण के बाद 11 बजे से समीक्षा बैठक आयोजित की गई, जिसमें जल प्रदाय, सीवरेज, ई-केवाईसी, स्वास्थ्य विभाग सहित अन्य सभी प्रमुख विभागों के प्रगतिरत कार्यों और योजनाओं की समीक्षा की गई। बैठक में निगमायुक्त श्री अहिरवार ने सभी अधिकारियों से कहा कि कार्यों में किसी भी प्रकार की कोताही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने सभी संबंधित अधिकारियों को अपने-अपने विभागों के कार्यों को उच्च गुणवत्ता के साथ निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूर्ण करें। मानसून पूर्व नाला-नाली सफाई के निर्देश, वर्षा जल निकासी व्यवस्था होगी और दुरुस्त आगामी मानसून को ध्यान में रखते हुए निगमायुक्त रामप्रकाश अहिरवार ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को विशेष रूप से निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि वर्षा ऋतु के आगमन से पहले शहर के सभी छोटे-बड़े नालों और नालियों की सघन सफाई सुनिश्चित की जाए। वर्षा काल के दौरान कहीं भी जल-भराव की स्थिति निर्मित न हो, इसके लिए व्यवस्थित वर्षा जल निकास की व्यवस्था करने के निर्देश दिए गए हैं। बैठक के दौरान निगमायुक्त श्री अहिरवार ने ने शासन की जनहितैषी योजनाओं के क्रियान्वयन की भी प्रगति देखी। उन्होंने हितग्राहियों के ई-केवाईसी कार्य में तेजी लाने और इसे शत-प्रतिशत पूर्ण करने के निर्देश दिए गए। शहर में चल रहे जल प्रदाय और सीवरेज नेटवर्क के कार्यों की समीक्षा करते हुए उन्होंने कहा कि पाइप लाइन बिछाने और मरम्मत के कार्यों को गति दी जाए ताकि नागरिकों को सुचारू रूप से मूलभूत सुविधाएं मिल सकें। सभी अधिकारी मैदानी स्तर पर उतरकर कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग करें।

जबलपुर को नंबर-1 बनाने छात्र-छात्राओं ने संभाली कमान, कॉलेजों में चलाया गया सघन फीडबैक अभियान

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

शहर को स्वच्छता सर्वेक्षण में देश का नंबर-1 शहर बनाने के लिए नगर निगम द्वारा चलाया जा रहा अभियान अब एक जन-आंदोलन का रूप ले चुका है। इसी कड़ी में आज शहर के विभिन्न प्रतिष्ठित महाविद्यालयों में एक वृहद और सघन जन-संपर्क अभियान चलाया गया। इस अभियान का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं, युवाओं और कॉलेज स्टाफ को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना तथा शहर की रैंकिंग सुधारने के लिए स्वच्छता फीडबैक फॉर्म भरवाना रहा। निगमायुक्त श्री रामप्रकाश अहिरवार के निर्देशन में नगर निगम की विशेष टीमों ने शहर के अलग-अलग कॉलेजों में पहुंचकर विद्यार्थियों और प्राध्यापकों से सीधा संवाद स्थापित किया। अभियान के दौरान शहर के शिक्षण संस्थानों में भारी उत्साह देखा गया। अलग-अलग महाविद्यालयों में प्राचार्यों और प्राध्यापकों के मार्गदर्शन में हजारों छात्रों ने इस मुहिम में हिस्सा लिया। महाकौशल कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. अल्केश चतुवेर्दी एवं अरुण शुक्ला के निर्देशन में लगभग 250 विद्यार्थियों ने फीडबैक दिया, मानकुंवर बाई कॉलेजरू प्राचार्या डॉ. माया मिश्रा एवं डॉ. ब्रह्मानंद त्रिपाठी के नेतृत्व में 150 छात्राएं अभियान से जुड़ीं, पॉलीटेक्निक कॉलेज प्राचार्य आर.सी. पाण्डेय एवं संजय शर्मा के मार्गदर्शन में 160 छात्रों ने सहभागिता की, सेंट अलॉयसस कॉलेज सदर एवं गौर तिराहा निदेशक फादर तंकच्चन जोस, प्राचार्या डॉ. रेनू पाण्डेय एवं अजय राणा के निर्देशन में करीब 200 छात्र-छात्राओं और स्टाफ ने फॉर्म भरे, हितकारिणी महिला महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. नीलेश पाण्डेय के निर्देशन में 110 छात्राओं ने हिस्सा लिया, जी.एस. महाविद्यालय नीरज केशरवानी के मार्गदर्शन में 80 छात्र इस मुहिम में शामिल हुए, महाराष्ट्र महाविद्यालय प्राचार्य डॉ. दिलीप सिंह हजारी और डी.एन. जैन कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय प्रोफेसर एच.एन. मिश्रा एवं डॉ. शैलेष जैन में भी छात्र-छात्राओं को स्वच्छता की बारीकियों से अवगत कराते हुए फीडबैक फॉर्म भरवाए गए। अपर आयुक्त मनोज श्रीवास्तव, उपायुक्त श्रीमती अंकिता जैन और सहायक क्रीड़ा अधिकारी बी.एस. दांगी, नगर निगम के प्राचार्य डॉ. शैलेंद्र पाण्डेय, डॉ. नर्मदा शर्मा, राकेश जैन, श्रीमती दीप्ति शर्मा, श्रीमती रागिनी गर्ग और श्रीमती कीर्ति परोहा ने उपस्थित रहकर विद्यार्थियों को स्वच्छता फीडबैक का महत्व समझाया और इस अभियान को गति प्रदान की। नगर निगम ने शहर के सभी नागरिकों से अपील की है कि वे भी आगे आकर अपना सकारात्मक फीडबैक दें और जबलपुर को स्वच्छता के शिखर पर पहुँचाने में अपना योगदान दें।

अतिक्रमण मुक्त हुए कई मुख्य मार्ग, नालों के ऊपर से हटाये गए अतिक्रमण, जलभराव से मिलेगी राहत

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

शहर की यातायात व्यवस्था को सुगम बनाने, स्वच्छता सर्वेक्षण में जबलपुर को अव्वल लाने और आगामी वर्षा ऋतु में जलभराव की समस्या से नागरिकों को निजात दिलाने के लिए नगर निगम ने अतिक्रमण हटाने अभियान चलाया। निगमायुक्त रामप्रकाश अहिरवार के निदेर्शानुसार नगर निगम के अमले ने शहर के विभिन्न जोन और मुख्य मार्गों से अस्थाई अतिक्रमण हटाने के साथ-साथ जर्जर संरचनाओं को भी हटाने की कार्रवाई की। इस मुहिम से जहां एक ओर राहगीरों को जाम से मुक्ति मिलेगी, वहीं दूसरी ओर नालों की सफाई के रास्ते भी साफ हुए हैं। अतिक्रमण अधिकारी के के रावत टिपेंद्र रावत एवं अखिलेश भदौरिया ने जानकारी देते हुए बताया कि नगर निगम की टीम ने आज सुबह से ही मुस्तैदी दिखाते हुए शहर के व्यस्ततम क्षेत्रों छोटी लाइन फाटक से अनगढ़ महावीर मंदिर मार्ग पर लगे अस्थाई ठेले-टपरों को हटाकर मार्ग को पूरी तरह खाली कराया गया। अनावश्यक रूप से सड़क घेरे हुए सामग्री को जब्त भी किया गया, रामपुर चैक एवं धनी की कुटिया क्षेत्र में भी ठेले-टपरों को हटाकर यातायात को सुचारू बनाया गया, कछपुरा ब्रिज और उसके आस-पास के क्षेत्र से अतिक्रमण साफ कर सामग्री जप्त की गई, जिससे अब यहां दुर्घटनाओं का अंदेशा कम होगा, सिविक सेंटर चौपाटी शहर के प्रमुख केंद्र के चारों ओर मुस्तैदी से कार्रवाई कर अतिक्रमण हटाया गया। धनवंतरी नगर मुख्य मार्ग एवं संभाग क्रमांक-01 में नालों के ऊपर किए गए अवैध निमार्णों को चिन्हित कर पूरी तरह हटा दिया गया, कंजर्वेंसी एवं नालियों के ऊपर किए गए कब्जों को साफ किया गया, ताकि बारिश का पानी बिना किसी रुकावट के बह सके। नागरिकों की सुरक्षा को सर्वोपरि रखते हुए जर्जर और खतरनाक हो चुकीं संरचनाओं को हटाया गया। गंगानगर क्षेत्र में एक बेहद पुरानी और जर्जर हो चुकी पुलिया को सुरक्षित रूप से तोड़ने की कार्रवाई की गई।

नेचुरली कोलेस्ट्रॉल कम करेंगे Pumpkin Seeds

ऐसे करेंगे इस्तेमाल, तो नसों में जमा गंदगी हो जाएगी साफ

खराब लाइफस्टाइल और ज्यादा प्रोसेस्ड फूड्स खाने की वजह से लोगों का कोलेस्ट्रॉल बढ़ रहा है। इसके कारण हार्ट अटैक, स्ट्रोक जैसी बीमारियों का खतरा काफी बढ़ जाता है। इसलिए कोलेस्ट्रॉल लेवल कंट्रोल करना बेहद जरूरी है।

कोलेस्ट्रॉल कम करने में कद्दू के बीज काफी मददगार साबित हो सकते हैं। जी हां, कद्दू के बीज कोलेस्ट्रॉल कम करने में एक नचुरल और असरदार उपाय के रूप में काम कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि कद्दू के बीजों का इस्तेमाल करके कोलेस्ट्रॉल कैसे कम किया जा सकता है।

कद्दू के बीजों कैसे कोलेस्ट्रॉल कम करते हैं?

कद्दू के बीजों में फाइबर, प्रोटीन, हेल्दी फैट्स, मैग्नीशियम, जिंक, और एंटीऑक्सीडेंट्स जैसे पोषक तत्व पाए जाते हैं। इनमें मौजूद मोनोअनसैचुरेटेड और पॉलीअनसैचुरेटेड फैट्स शरीर में बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने और गुड कोलेस्ट्रॉल को बढ़ाने में मदद करते हैं। साथ ही, इनमें मौजूद फाइबर शरीर से एक्स्ट्रा कोलेस्ट्रॉल को बाहर निकालने में मददगार होता है।

कोलेस्ट्रॉल कम करने के लिए कैसे खाएं कद्दू के बीज?

- **कच्चे या भुने हुए बीज :** कद्दू के बीजों को कच्चा या भूनकर खाया जा सकता है। भुने हुए बीजों का स्वाद ज्यादा अच्छा होता है और ये एक हेल्दी स्नैक के रूप में काम करते हैं। रोजाना एक मुट्ठी (लगभग 30 ग्राम) कद्दू के बीजों खाने से कोलेस्ट्रॉल लेवल को कंट्रोल करने में मदद मिलती है।
- **सलाद या स्मूदी में मिलाएं :** कद्दू के बीजों को सलाद, दही, या स्मूदी में मिलाकर खाने से न केवल पोषण बढ़ता है, बल्कि ये कोलेस्ट्रॉल को कम करने में भी मदद करते हैं। इन्हें ओटमील के साथ भी मिलाया जा सकता है।
- **कद्दू के बीजों का तेल:** कद्दू के बीजों का तेल भी कोलेस्ट्रॉल कम करने में फायदेमंद होता है। इस तेल को सलाद ड्रेसिंग या खाना पकाने में इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, इस तेल को ज्यादा तापमान पर पकाने से बचना चाहिए।
- **कद्दू के बीजों का पाउडर:** कद्दू के बीजों को पीसकर पाउडर बनाया जा सकता है। इस पाउडर को सूप, सब्जियों, या शेक में मिलाकर खाया जा सकता है। यह एक आसान तरीका है, जिससे आप रोजाना कद्दू के बीजों को खा सकते हैं।
- **नट्स और सीड्स के साथ मिक्स करें:** कद्दू के बीजों को अलसी के बीज, सूरजमुखी के बीज, या बादाम के साथ मिलाकर एक हेल्दी ट्रेल मिक्स बनाया जा सकता है। इसे दिन में कभी भी स्नैक के रूप में खाया जा सकता है।

इन बातों का ध्यान रखें

- *कद्दू के बीजों का सीमित मात्रा में खाएं, क्योंकि इन्हें ज्यादा खाने से पेट संबंधी समस्याएं हो सकती हैं।*
- *अगर आप किसी स्वास्थ्य समस्या से जूझ रहे हैं, तो कद्दू के बीजों को डाइट में शामिल करने से पहले डॉक्टर से सलाह लें।*
- *कद्दू के बीजों को हमेशा एयरटाइट कंटेनर में स्टोर करें, ताकि इनकी ताजगी बनी रहे।*

सनस्क्रीन लगाते समय रखें इन बातों का ध्यान

हालांकि, अगर आपके मन में अभी भी यह सवाल है, तो आप सनस्क्रीन लगाने समय निम्न बातों का ध्यान रख सकते हैं। इससे सूरज से स्किन की सुरक्षा भी होगी और शरीर को विटामिन-डी बनाने में भी आसानी होगी।

- *सनस्क्रीन लगाने से पहले सुबह या दोपहर में 10-15 मिनट धूप में रहें।*
- *अपनी डाइट में विटामिन-डी रिच फूड्स जैसे फैटी फिश, अंडे की जर्दी और फोर्टिफाइड डेयरी प्रोडक्ट आदि शामिल करें।*
- *अगर शरीर में इसकी कमी है, तो डॉक्टर की सलाह से विटामिन डी सप्लीमेंट्स ले सकते हैं।*

क्या रोजाना सनस्क्रीन लगाने से हो सकती है Vitamin-D की कमी

जानें कितना सही है इसका इस्तेमाल

गर्मियों का मौसम शुरू हो चुका है और इसी के साथ अब खानपान से लेकर रहन-सहन तक सबकुछ बदलने लगा है। सेहत के साथ-साथ इस मौसम में स्किन का भी खास ख्याल रखना पड़ता है। सूरज की तेज किरणें न सिर्फ सेहत खराब कर सकती हैं, बल्कि इसकी वजह से त्वचा पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है। ऐसे में स्किनकेयर का खास ध्यान रखना पड़ता है।

त्वचा को हेल्दी बनाने के लिए यूं तो कई सारी चीजों का इस्तेमाल किया जाता है, लेकिन सनस्क्रीन सबसे ज्यादा जरूरी स्किन केयर प्रोडक्ट माना जाता है। यह स्किन को सूरज की हानिकारक यूवी किरणों से बचाता है, लेकिन क्या आपने कभी सोचा कि रोजाना सनस्क्रीन लगाने से शरीर में विटामिन डी की कमी हो सकती है? आमतौर पर शरीर के सूरज की किरणों के संपर्क में आने से ही विटामिन-डी बनता है, लेकिन अगर शरीर पर रोजाना सनस्क्रीन लगाया जाए, तो क्या यह विटामिन बनने की प्रोसेस में रुकावट आ सकती है? आइए जानते हैं इस सवाल का सच-

शरीर में कैसे बनता है विटामिन डी?

विटामिन-डी हमारे शरीर में मौजूद जरूरी विटामिन में से एक है, जिसे सनशाइन विटामिन भी कहा जाता है।

यह नेचुरली हमारे शरीर में तब बनता है, जब सूरज की किरणें स्किन के कॉन्टैक्ट में आती है। ये किरणें त्वचा में अब्जॉर्ब होती है, जिससे शरीर को विटामिन डी बनाने में मदद मिलती हैं, जो मजबूत हड्डियों, बेहतर इम्युनिटी और पूरी सेहत के लिए जरूरी है।

हालांकि, सनस्क्रीन को इस तरह बनाया गया है कि यह UV किरणों को रोकता है, जो इस बारे में चिंताएं बढ़ाता है कि क्या इसका लगातार इस्तेमाल करने से यह विटामिन डी के प्रोडक्शन में बाधा डाल सकता है।

सनस्क्रीन से हो सकती है विटामिन डी की कमी?

कुछ रिसर्च बताते हैं कि जब हाई SPF वाला सनस्क्रीन लगाया जाता है, तो यह त्वचा की UV किरणों को अब्जॉर्ब करने की क्षमता को कम कर सकता है, जो बदले में विटामिन डी के प्रोडक्शन को कम कर सकता है। हालांकि, असल में, ज्यादातर लोग खुली त्वचा पर एक समान, मोटी परत में सनस्क्रीन नहीं लगाते हैं, जिससे कुछ UV किरणों को त्वचा में प्रवेश करने और विटामिन डी सिंथेसिस करने की अनुमति मिलती है। ब्रिटिश जर्नल ऑफ डर्मेटोलॉजी में पब्लिश हुई एक अध्ययन के मुताबित कि उच्च SPF सनस्क्रीन के इस्तेमाल के बाद भी लोगों में पर्याप्त मात्रा में विटामिन डी का उत्पादन होता है।

इसका मतलब यह है कि सनस्क्रीन यूवी एक्सपोजर को कम तो करता है, लेकिन यह शरीर में विटामिन डी बनने की प्रोसेस को पूरी तरह से ब्लॉक नहीं करता है। इतना ही नहीं अमेरिकन एकेडमी ऑफ डर्मेटोलॉजी के विशेषज्ञों समेत कई अन्य विशेषज्ञों का भी कहना है कि सनस्क्रीन लगाने के बाद भी शरीर को विटामिन डी के लिए पर्याप्त धूप मिलती है।

स्कूल से घर आने के बाद बच्चों को सिखाएं ये 5 आदतें, देखते ही हर कोई करेगा तारीफ

बच्चों को बचपन से ही अगर अच्छी आदतें सिखाई जाएं तो वह आगे चलकर बहुत संस्कारी बनते हैं। इसलिए यह जरूरी है कि बच्चों को हमेशा छोटेपन में ही अच्छी आदतें सिखाई जाएं। ताकि जब वह बड़े हो जाएं तो काफी संस्कारी हो जाएं। आज हम आपको उन 5 आदतों के बारे में बताने जा रहे हैं जिन्हें आपको बच्चो को सिखाना चाहिए। जब बच्चे स्कूल से घर लौट आएं तो उन्हें ये आदतें हर हाल में सिखाना चाहिए।

1. **अपने स्कूल बैग और सामान को व्यवस्थित करना :** बच्चों को अपने बैग और सामान को व्यवस्थित करने की आदत Good habits for kids सिखानी चाहिए। इससे उन्हें अपने सामान को आसानी से ढूंढने में मदद मिलेगी और वे अपने समय का सही उपयोग कर पाएंगे। बच्चा जब स्कूल से आए तो उसे बताएं कि आपने अपना सामान उसकी ठीक जगह पर रखना है।
2. **अपने हाथ धोना और चेहरा धोना:** स्कूल से लौट आने के बाद बच्चों After school routine for kids को अपने हाथ धोना और चेहरा धोने की आदत के बारे में बताएं। इससे उन्हें स्वस्थ रहने में मदद मिलेगी और वे बीमारियों से बचे रहेंगे। बच्चे जब स्कूल से घर लौट आएं तो सबसे पहले आप उन्हें स्कूल यूनिफॉर्म उतारने के लिए कहें। इसके बाद उनसे कहें कि वो हाथ धोएं। हाथ धोकर ही खाना खाएं।
3. **बैग से लंच बॉक्स बाहर निकालना :** बच्चों को अपने काम खुद करने की आदत Discipline tips for kids डलवानी चाहिए। जब बच्चे स्कूल से आए तो उन्हें कहें कि वह अपने स्कूल बैग से लंच बॉक्स बाहर निकालें ताकि उसे धोकर कल फिर उन्हें उसमें लंच दे दिया जाए। बच्चों को छोटे-छोटे कामों की जिम्मेदारी याद दिलाइए। इसके साथ ही बच्चों को घर के कामों में मदद करने की आदत सिखानी चाहिए। इससे उन्हें अपने घर के कामों को समझने में मदद मिलेगी और वे अपने परिवार के साथ मिलकर काम कर पाएंगे।
4. **अपने समय का सही उपयोग करना:** बच्चों को अपने समय का सही उपयोग करने की आदत सिखानी चाहिए। इससे उन्हें अपने कामों को समय पर पूरा करने में मदद मिलेगी और वे अपने समय का सही उपयोग कर पाएंगे। इसके साथ ही बच्चों को अपने माता-पिता के साथ बातचीत करने की आदत सिखानी चाहिए।

इससे उन्हें अपने माता-पिता के साथ अपने विचारों और भावनाओं को साझा करने में मदद मिलेगी और वे अपने माता-पिता के साथ मजबूत संबंध बना पाएंगे। इन आदतों को सिखाने से बच्चे अपने जीवन में सफल और स्वस्थ रहेंगे।

बच्चों को अगर बनाना है संस्कारी

तो 12 साल की उम्र तक सिखा दें हर हाल में ये 4 आदतें

हर मां बाप का सपना होता है कि उनके बच्चे संस्कारी बनें। लेकिन बच्चों को संस्कारी बनाने के लिए उनके बचपन में ही मां-बाप को प्रयत्न करना चाहिए। क्योंकि एक दिन में किसी के भी बच्चे संस्कारी नहीं बनते। अगर आपको अपने बच्चों को संस्कारी बनाना है तो उन्हें बचपन से अच्छी आदतें सिखानी होंगी। क्योंकि जब आप बच्चों को बचपन में अच्छे संस्कार देते हैं तो यह संस्कार अंत तक उनके साथ रहते हैं। इसलिए हमेशा कोशिश करनी चाहिए कि आप शुरू से ही बच्चों के अंदर अच्छे संस्कार देने का विस्तार करें ताकि समाज में वह आपका नाम रोशन करें। आज हम आपको उन 4 आदतों के बारे में बताने जा रहे हैं जो बचपन में ही आपको अपने बच्चों को सिखा देना चाहिए।

1. **समय की पाबंदी सिखाएं :** बच्चों को समय की पाबंदी की आदत सिखानी चाहिए। उन्हें सिखाना चाहिए कि समय का सही उपयोग कैसे करना है और अपने कामों को समय पर पूरा करना है। जिन बच्चों को माता पिता समय की पाबंदी नहीं सिखाते वह बच्चे जीवन में सफलता अर्जित नहीं कर पाते। इसलिए बच्चों को समय की पाबंदी सिखाना बहुत जरूरी है।
2. **स्वच्छता और सफाई:** अगर बच्चों को आप एक बार सफाई का महत्व अच्छे से समझाने में कामयाब हो गए तो बच्चे बड़े होने तक सफाई का ध्यान रखते हैं। यह चीज उन्हें बाकियों से अलग बनाती है। बच्चों को स्वच्छता और सफाई की आदत सिखानी चाहिए। उन्हें सिखाना चाहिए कि अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ और साफ रखना कितना जरूरी है।
3. **सम्मान और अनुशासन:** जो बच्चे बड़ों को उनकी उम्र के लिहाज से सम्मान देते है। ऐसे बच्चे जीवन में काफी आगे बढ़ते हैं। फिर इज्जत पाने का सबसे बड़ा मूलमंत्र यही है कि आप दूसरों को इज्जत देना शुरू कर दें। बच्चों को सम्मान और अनुशासन की आदत सिखानी चाहिए। उन्हें सिखाना चाहिए कि अपने बड़ों का सम्मान करना और अनुशासन में रहना कितना जरूरी है।
4. **सहयोग और सहानुभूति :** बच्चों को सहयोग और सहानुभूति की आदत सिखानी चाहिए। उन्हें सिखाना चाहिए कि दूसरों की मदद करना और उनकी भावनाओं का सम्मान करना कितना जरूरी है। बच्चों को सिखाइए कि मुश्किल समय में किसी को किस तरह सहयोग किया जाता है। किस तरह परेशान लोगों की मदद की जाती है और उन्हें सहानुभूति दी जाती है।

एक बार का चीटर... चीटिंग पर आयुष्मान

सारा अली खान

के बीच छिड़ी जंग, दिया बड़ा

बॉलीवुड में सालों से अफेयर्स पर फिल्में बनती आ रही हैं. अब इस लिस्ट में एक और फिल्म का नाम ऐड हो गया है. फिल्म का नाम है पति,पत्नी और वो दो. फिल्म को डायरेक्ट किया है मुदस्सर अजीज ने. फिल्म में लीड रोल में हैं एक्टर सारा अली खान, आयुष्मान खुराना, वामिका गब्बी और रकुलप्रीत सिंह. हाल ही में फिल्म के प्रमोशन के दौरान एक इंटरव्यू में दोनों सितारों के बीच 'रिश्तों में धोखे' यानी इन्फेडिलिटी को लेकर एक मजेदार बहस देखने को मिली.इंटरव्यू के दौरान जब दोनों से पूछा गया कि क्या एक बार धोखा देने वाला इंसान हमेशा धोखा देता है?, तो सारा अली खान ने इस पर बहुत कड़ा रुख अपनाया.

सारा ने साफ शब्दों में कहा, हां, जो एक बार धोखा देता है, वह हमेशा धोखेबाज ही रहता है. सारा का मानना है कि अगर किसी ने

एक बार भी पार्टनर को धोखा दिया, तो उस पर 'धोखेबाज' का जो टैग लगता है, उसे कभी हटाया नहीं जा सकता. भले ही वो व्यक्ति भविष्य में दोबारा ऐसा न करे, लेकिन वो ये दावा करने का हक खो देता है कि वो किसी के लिए लॉयल था.

आयुष्मान खुराना ने क्या कहा ?

दूसरी तरफ, आयुष्मान खुराना ने सारा की इस बात पर थोड़ी अहसहमती जताई. आयुष्मान ने कहा कि कोई भी इंसान जन्म से परफेक्ट या 'ग्रीन फ्लैग' नहीं होता. इंसान गलतियों से सीखता है और बदल सकता है. एक गलत इंसान भी वक्त के साथ अच्छा इंसान बन सकता है. रकुल प्रीत सिंह ने भी आयुष्मान की बात से अग्री किया.

आयुष्मान ने खींची सारा की टांग

जब सारा अपनी बात पर अड़ी रहीं, तो आयुष्मान ने मजाकिया अंदाज में उनकी टांग खींचते हुए कहा, सारा, अब उसे जाने दो, भूल जाओ और माफ कर दो. आयुष्मान का इशारा सारा के पुराने रिश्तों की तरफ था, जिसे सुनकर वहां मौजूद सभी लोग हंस पड़े. बता दें कि इनकी फिल्म 'पति पत्नी और वो 2' हाल ही में 15 मई 2026 को सिनेमाघरों में रिलीज हुई है.

'मैं डेट्स पर जा रहा था...' शेफाली संग फेल शादी पर हर्ष छाया ने खोले सारे राज, बताया क्यों टूटा रिश्ता

बॉलीवुड एक्ट्रेस शेफाली शाह को इंडस्ट्री की सबसे सीनियर और काबिल अदाकाराओं में से एक के तौर पर जाना जाता है. शेफाली ने अपने करियर की शुरुआत टीवी से की थी और आज न सिर्फ फिल्मों में बल्कि वो टीवी का भी एक जाना माना नाम बन गई हैं. शेफाली ने अपने करियर में एक से बढ़कर एक किरदारों को निभाया है और सभी में उनकी एक्टिंग का हर कोई कायल हुआ है. शेफाली को उनकी एक्सप्रेसिव आंखों और दमदार एक्टिंग के लिए जाना जाता है.

शेफाली ने इंडस्ट्री में काफी स्ट्रगल किया है. एक्ट्रेस ने दो शादियां कीं. उन्हें पहले रिश्ते में काफी उतार-चढ़ाव का सामना करना पड़ा, जबकि दूसरी शादी में वो एक खुशहाल जीवन जी रही हैं. शेफाली ने साल 1994 में एक्टर हर्ष छाया के साथ शादी की थी. हाल ही में शेफाली के एक्स पति हर्ष ने अपने फेल रिश्ते के बारे में बात की.

हर्ष ने की खुलकर बात

हर्ष ने अपने रिश्ते पर बात करते हुए कहा- ये काफी पर्सनल बात रही है. हमारा केस काफी अलग है. मैंने देखा कि ये रिलेशनशिप कहीं नहीं जा रही थी. जब मैंने सुना कि मैं तुम्हारे साथ नहीं रहना चाहती, तो उससे काफी वक्त पहले ही मुझे इस बारे में लगने लगा था. मैं चीजों को अपने ऊपर भारी नहीं होने देता. मैं अपना ध्यान अपने काम में लगा दिया. मैं दिल्ली से मुंबई आया था और इसी काम के लिए आया था. मैं ऐसी जगह से आता हूं, जहां चीजों को इतनी सीरियसली नहीं लिया जाता.

2000 में अलग हो गए रास्ते

हर्ष ने आगे बताया कि उनकी लाइफ में एक फेज आया था जहां वो काफी गुस्से में रहने लगे थे. उन्होंने यहां तक माना कि वो शेफाली से अलग होने के बाद कई डेट्स पर भी गए थे. हर्ष ने कहा कि मैं ये कहना चाहता हूं कि अगर आप किसी बात से जूझ रहे हैं तो उसके बारे में बात करना ही एकमात्र ऑप्शन है. उससे लड़ना सीखिए. ये जरूरी है. तलाक कोई बड़ी बात नहीं है. उन्होंने ये भी माना कि अच्छी बात ये रही कि उन्होंने और शेफाली ने इन बातों को लंबा खींचा नहीं. साल 2000 में अपने तलाक के बाद शेफाली ने फिल्ममेकर विपुल अमृतलाल शाह के साथ शादी की और उनके दो बेटे हैं. वहीं हर्ष ने भी बाद में शादी कर ली.

बिमल रॉय के सिनेमा से ऐश्वर्या राय बच्चन के जलवे तक, कितना बदल गया बॉलीवुड का कान्स कनेक्शन?

कान्स फिल्म फेस्टिवल का अपना इतिहास है. बहुत कम लोगों को मालूम होगा कि मुसोलिनी और हिटलर के फासीवादी हस्तक्षेप के विरोध में इस समारोह का गठन किया गया था. इसका किस्सा भी बहुत दिलचस्प है. इस कहानी का जिक्र मैं आगे करुंगा लेकिन इसी के साथ आपको यह भी बताएं कि कान्स से भारतीय फिल्मों का कनेक्शन भी उतना ही पुराना है. कान्स फिल्म फेस्टिवल सिनेमा की उदारवादी परंपरा को आगे बढ़ाने के लिए शुरू किया गया था. तब भारत के यथार्थवादी फिल्मकारों ने इसमें बढ़चढ़कर हिस्सा लिया. उस मिजाज की फिल्में बनाई, जिनका संबंध वृहत्तर समाज से था. यह सिलसिला आज भी जारी है.

कान्स फिल्म समारोह कलात्मक सिनेमा के प्रोत्साहन का विश्व प्रसिद्ध मंच है. आज कान्स भले ही भारतीय फिल्म इंडस्ट्री की ओर से ऐश्वर्या राय बच्चन के पहुंचने, न पहुंचने और आलिया भट्ट, तारा सुतारिया या उर्वशी ढोलकिया जैसी ग्लैमरस अभिनेत्रियों की ड्रेस और सुर्खियां पाने वाले फैशन का खास मंच माना जाता हो लेकिन तब बिल्कुल ऐसा ही नहीं था. हां, कान्स मॉडर्न फैशन के लिए मशहूर था लेकिन गुड सिनेमा को प्रोत्साहन देने वाला समारोह भी है.

कान्स में ग्लैमर ने अब ज्यादा स्पेस ले लिया

इस लिहाज से कान्स फिल्म फेस्टिवल में सामाजिक दायित्व से जुड़े सिनेमा का निर्वाह किया जाता रहा है. करीब अस्सी साल से भी अधिक समय से कान्स फिल्म फेस्टिवल चल रहा है और इस दौरान यहां मिलने वाला पाल्म डी'ओर सम्मान दुनिया भर के फिल्मकारों के लिए सपना रहा है तो फिल्म प्रेमियों के लिए चर्चा का खास विषय भी. हालांकि समय के साथ-साथ कान्स समारोह में ग्लैमर ने भरपूर स्पेस ले लिया. सुर्खियां सितारों की गतिविधियों और उनकी पोशाकों ने ले ली, सार्थक फिल्मों की अहमियत हाशिये पर चली गई.

वास्तव में कान्स फ्रांस का सभी सुविधाओं से युक्त एक आधुनिक शहर है- यहां आयोजित होने वाले फिल्म समारोह को कान्स फिल्म फेस्टिवल कहते हैं. वैसे तो इसकी स्थापना सन् 1938 में हो गई थी लेकिन इसका विधिवत प्रारंभ सन् 1946 से माना जाता है. भारत के लिए ये साल काफी महत्वपूर्ण थे. भारत में स्वाधीनता आंदोलन चरम पर था. ज्यादातर देश भक्ति या सामाजिक सुधार की फिल्में बनती थीं. आज भी कान्स में वही फिल्में दिखाई जाती हैं, जो मेनस्ट्रीम कमर्शियल से हटकर होती है. जिसमें देश, समाज और जनता को कुछ सोचने विचारने के लिए दिखाया जाता है.

रात में 2.30 बजे किसकी कब्र खोदने लगे

शाहरुख खान

सन्न रह गया था परिवार

बॉलीवुड के किंग खान अपनी लाइफ को अक्सर प्राइवेट ही रखना पसंद करते हैं. उनकी जिंदगी के बारे में कम ही चीजें बाहर फैंस के कानों तक आती हैं. शाहरुख इंडस्ट्री के सबसे एक्टर्स में से एक हैं लेकिन फिर भी वो अपने संतुलित और सादगी से भरे जीवन के लिए जाने जाते हैं. शाहरुख ने हमेशा ही अपने परिवार को हर चीज से ऊपर रखा है और ये झलक उनके किरदारों में भी दिखती है.हाल ही में शाहरुख की पत्नी गौरी खान के एक अंकल का पुराना वीडियो तेजी से सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है. इस वायरल वीडियो में गौरी के अंकल ने बताया कि शाहरुख अपने पेट डॉग से कितना प्यार करते थे और जब उनके पेट डॉग की मौत हुई तो उस बात ने एक्टर को किस हद तक परेशान किया था.

अपने हाथों से खोदी कब्र

गौरी के मामा ने एक इंटरव्यू में बताया था कि गौरी उनकी भांजी हैं और उन्होंने एक बार गौरी को चाइनीज पेकिंगीज ब्रीड का एक प्यारा सा डॉग गिफ्ट किया था. जिस पल वो कुत्ता मर गया, शाहरुख के स्टाफ ने उन्हें बिना बताए उसे सीशोर के पास पूरे सम्मान के साथ दफना दिया. जब शाहरुख देर रात काम से वापस आए तो उन्हें डॉग की मौत की खबर मिली. इस खबर ने एक्टर को अंदर तक हिला दिया था. रात के 2.30 बजे उन्होंने अपने स्टाफ को उठाया और वहां ले जाने को कहा जहां उन्होंने उसे दफनाया था.

डॉग के लिए फूट-फूटकर रोए किंग खान

गौरी के अंकल ने आगे कहा- शाहरुख ने अपने हाथों से उस कब्र को खोदा, डॉग की बॉडी को बाहर निकाला और फिर घर के बैकयार्ड में अपने हाथों से एक छोटी सी कब्र खोदकर उसे वहां दफनाया. शाहरुख ने बाकायदा वहां एक मेमोरियल बनाया और बहुत रोए. उन्होंने अपने स्टाफ को काफी डांटते हुए कहा- 'तुम्हारी हिम्मत कैसे हुई मेरे डॉग को ऐसे फेकने की. वो यही रहेगा, चाहें जिंदा या मुर्दा.'

भीषण गर्मी से बेहाल जनजीवन, नौतपा से पहले ही 45 डिग्री तक पहुंचने लगा पारा

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

संभाग के जिलों में भीषण गर्मी का कहर लगातार बढ़ता जा रहा है। तेज धूप और गर्म हवाओं ने आम जनजीवन को बुरी तरह प्रभावित कर दिया है। शुक्रवार सुबह से ही सूरज के तीखे तेवर देखने को मिले और दोपहर होते-होते हालात और अधिक कठिन हो गए। मौसम विशेषज्ञों के अनुसार राजस्थान के रेगिस्तानी इलाकों से आ रही गर्म हवाओं के कारण पूरे क्षेत्र में तापमान लगातार बढ़ रहा है। तेज धूप और लू जैसे हालात के चलते दोपहर के समय सड़कों पर आवाजाही कम दिखाई दी। कई कॉलोनियों और बाजारों में सन्नाटा पसरा रहा। लोग केवल जरूरी काम होने पर ही घरों से बाहर निकल रहे हैं। मौसम विभाग का कहना है कि फिलहाल गर्मी से राहत मिलने के कोई संकेत नहीं हैं। आगामी 25 मई से शुरू होने वाले नौतपा के दौरान स्थिति और अधिक गंभीर हो सकती है। मौसम विभाग के अनुसार आसमान पूरी तरह साफ होने और नमी बेहद कम रहने के कारण सूर्य की किरणें सीधे जमीन पर पड़ रही हैं, जिससे धरती तेजी से तप रही है। यही वजह है कि दिन में लू जैसे हालात बन रहे हैं और रात में भी गर्मी से राहत नहीं मिल रही।विशेषज्ञों का मानना है कि इस बार नौतपा का असर सामान्य से अधिक रह सकता है। मई के अंतिम दिनों में तापमान में और बढ़ोतरी की संभावना जताई जा रही है।

मौसम वैज्ञानिकों ने लोगों को दोपहर 12 बजे से 3 बजे के बीच विशेष सावधानी बरतने की सलाह दी है। लोगों से पर्याप्त पानी पीने, शरीर को हाइड्रेट रखने और धूप में निकलने से बचने की अपील की गई है। बच्चों और बुजुर्गों को खास सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं।शुक्रवार को सुबह से ही तेज धूप ने लोगों को परेशान करना शुरू कर दिया था। सुबह 11:30 बजे तक तापमान 40.2 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। स्थानीय मौसम वेधशाला के प्रभारी अधिकारी देवेंद्र कुमार तिवारी ने बताया कि पारा लगातार बढ़ रहा है और दोपहर बाद इसके 45 डिग्री सेल्सियस तक पहुंचने की पूरी संभावना है। गर्मी बढ़ने के साथ ही अस्पतालों में हीट स्ट्रोक, डिहाइड्रेशन और कमजोरी की शिकायत लेकर पहुंचने वाले मरीजों की संख्या भी बढ़ने लगी है। डॉक्टरों ने लोगों को धूप में निकलते समय सिर ढंकने, हल्के कपड़े पहनने और अधिक से अधिक तरल पदार्थ लेने की सलाह दी है। वहीं प्रशासन ने भी नागरिकों से सावधानी बरतने और मौसम विभाग की सलाह का पालन करने की अपील की है।

खरीफ सीजन से पहले खाद वितरण की तैयारी तेज, नकली बीज-खाद बेचने वालों पर प्रशासन की नजर

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

खरीफ सीजन को देखते हुए किसानों को समय पर खाद उपलब्ध कराने के लिए प्रशासन, विपणन महासंघ और कृषि विभाग ने तैयारियां तेज कर दी हैं। जिले के सेंट्रल और डबल लॉक केंद्रों पर किसानों की भीड़ बढ़ने लगी है। धान की बोवनी और रोपाई को ध्यान में रखते हुए डीएपी और अन्य उर्वरकों की मांग लगातार बढ़ रही है, जिसके चलते अधिकारी खाद वितरण व्यवस्था को संतुलित बनाए रखने की रणनीति पर काम कर रहे हैं।

अधिकारियों के अनुसार हर वर्ष बढ़ती खाद की मांग को देखते हुए इस बार प्रति एकड़ एक बोरी डीएपी देने की व्यवस्था बनाई जा रही है ताकि किसी प्रकार का संकट उत्पन्न न हो। किसानों को यह भी समझाया जाएगा कि निर्धारित मात्रा में ही उर्वरकों का उपयोग करें, क्योंकि अत्यधिक रासायनिक खाद के प्रयोग से जमीन की उर्वरा शक्ति प्रभावित हो रही है। प्रारंभिक योजना के तहत एक किसान को अधिकतम 20 बोरी डीएपी देने की व्यवस्था बनाई जा रही है। हालांकि खरीफ सीजन में डीएपी की खपत रबी की तुलना में कम रहती है।

कृषि विभाग के आंकड़ों के अनुसार वर्ष 2024 की तुलना में इस बार खाद वितरण में उल्लेखनीय वृद्धि दर्ज की गई है। पिछले वर्ष जिले के विभिन्न डबल लॉक केंद्रों पर 2 हजार 383 मीट्रिक टन यूरिया, 1 हजार 387 मीट्रिक टन डीएपी और 1 हजार 165 मीट्रिक टन एनपीके खाद का वितरण किया गया था। इस वर्ष डीएपी का वितरण 91 प्रतिशत तक पहुंचने की संभावना है, जबकि यूरिया और एनपीके की मांग में भी तेजी दर्ज की जा रही है।

विशेषज्ञों का कहना है कि यदि किसानों को एनपीके खाद के महत्व के बारे में सही जानकारी दी जाए तो डीएपी पर निर्भरता कम हो सकती है। एनपीके उर्वरक में नाइट्रोजन, फॉस्फोरस और पोटाश जैसे तीन प्रमुख पोषक तत्व मौजूद रहते हैं, जो फसलों की वृद्धि और उत्पादन के लिए अत्यंत आवश्यक माने जाते हैं। नाइट्रोजन पौधों

की बढ़वार में मदद करता है, फॉस्फोरस जड़ों और बीजों के विकास को मजबूत बनाता है, जबकि पोटाश पौधों की रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में सहायक होता है।

कृषि विशेषज्ञों के अनुसार अधिकांश किसान एनपीके 12:32:16 का उपयोग करते हैं, जिसमें 12 प्रतिशत नाइट्रोजन, 32 प्रतिशत फॉस्फोरस और 16 प्रतिशत पोटाश होता है। जबकि डीएपी उर्वरक में पोटाश नहीं होता। डीएपी का पूरा नाम डाय अमोनियम फॉस्फेट है, जो मुख्य रूप से फॉस्फोरस आधारित उर्वरक माना जाता है।

इधर खरीफ सीजन शुरू होते ही नकली खाद और बीज बेचने वाले गिरोह भी सक्रिय हो गए हैं। जिले में कई स्थानों पर फर्जी कंपनियों के नाम से नकली बीज और उर्वरक बेचे जाने की शिकायतें सामने आ रही हैं। बताया जा रहा है कि कुछ व्यापारी और डीलर नकली बीज को प्रमाणित बताकर किसानों को बेच रहे हैं। ब्रांडेड कंपनियों के नाम और लेबल लगाकर नकली माल पैक किया जा रहा है।

प्रशासन और कृषि विभाग ने ऐसे कारोबारियों पर निगरानी बढ़ा दी है। अधिकारियों का कहना है कि किसानों को केवल अधिकृत विक्रेताओं से ही बीज और खाद खरीदना चाहिए तथा बिल अवश्य लेना चाहिए। दो वर्ष पहले पुलिस ने इसी तरह के एक गिरोह का भंडाफोड़ करते हुए बड़ी मात्रा में नकली खाद और बीज बनाने की सामग्री जब्त की थी। कृषि विभाग ने किसानों से अपील की है कि किसी भी संदिग्ध खाद या बीज की जानकारी तुरंत विभाग को दें ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके और किसानों को नुकसान से बचाया जा सके।

ट्रेन में झपकी के दौरान मोबाइल चोरी, जीआरपी की सतर्कता से आरोपी गिरफ्तार

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

रेलवे स्टेशन पर उस समय अफरा-तफरी मच गई जब एक यात्री के मोबाइल चोरी की घटना सामने आई। यह घटना उस समय हुई जब एक यात्री प्लेटफॉर्म नंबर 6 पर ट्रेन का इंतजार कर रहा था और थोड़ी देर के लिए उसे नींद आ गई। इसी दौरान अज्ञात युवक ने उसकी जेब से मोबाइल फोन चोरी कर लिया। जानकारी के अनुसार जैसे ही यात्री की नींद खुली तो उसने अपना मोबाइल गायब पाया। उसने तुरंत आसपास हंगामा किया और जीआरपी को इसकी सूचना दी। सूचना मिलते ही जीआरपी पुलिस मौके पर पहुंची और प्लेटफॉर्म क्षेत्र में सघन तलाशी अभियान शुरू किया। तलाशी के दौरान पुलिस ने एक संदिग्ध युवक को हिरासत में लिया, जिसके पास से चोरी किया गया मोबाइल फोन बरामद हुआ।

पूछताछ में आरोपी ने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया। आरोपी की पहचान मौसीन अंसारी के रूप में हुई है, जो स्टेशन परिसर में संदिग्ध रूप से घूम रहा था और यात्रियों को निशाना बना रहा था। जीआरपी पुलिस ने बताया कि आरोपी के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उससे पूछताछ की जा रही है कि वह पहले भी इस तरह की घटनाओं में शामिल रहा है या नहीं। पुलिस यह भी जांच कर रही है कि आरोपी का कोई गिरोह तो नहीं है जो रेलवे स्टेशन और ट्रेनों में चोरी की वारदातों को अंजाम देता हो। जीआरपी अधिकारियों ने यात्रियों से अपील की है कि यात्रा के दौरान अपने सामान और मोबाइल फोन की सुरक्षा का विशेष ध्यान रखें। साथ ही किसी भी संदिग्ध व्यक्ति की जानकारी तुरंत रेलवे पुलिस को दें ताकि समय रहते कार्रवाई की जा सके और ऐसी घटनाओं पर रोक लगाई जा सके।

सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में मरीज को नहीं मिला इलाज, परिजनों का हंगामा

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

मनमोहन नगर स्थित सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में गुरुवार देर रात उस समय हंगामे की स्थिति बन गई जब गंभीर हालत में पहुंचे एक मरीज को समय पर इलाज नहीं मिल सका। परिजनों ने अस्पताल प्रबंधन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए जमकर विरोध प्रदर्शन किया और मुख्य गेट पर धरने की स्थिति बन गई। जानकारी के अनुसार, गंभीर अवस्था में एक गर्भवती महिला को परिजन उपचार के लिए अस्पताल लेकर पहुंचे थे। परिजनों का आरोप है कि अस्पताल में मौजूद स्टाफ ने प्राथमिक उपचार देने के बजाय उन्हें स्ट्रेचर तक उपलब्ध नहीं कराया। इस दौरान मरीज की हालत लगातार बिगड़ती रही, जिससे परिजनों में आक्रोश फैल गया। स्थिति बिगड़ने पर अस्पताल परिसर में मौजूद चीफ मेडिकल एंड हेल्थ ऑफिसर (सीएमएचओ) को सूचना दी गई। वे मौके पर पहुंचे और स्थिति को शांत कराने का प्रयास किया। अधिकारियों ने परिजनों से बातचीत कर मामले की जानकारी ली और जांच के आदेश दिए। युवा कांग्रेस कार्यकताओं ने भी अस्पताल प्रबंधन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए ड्यूटी पर मौजूद चिकित्सक पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया। कार्यकताओं ने कहा कि अस्पताल में आवश्यक चिकित्सा सुविधाओं की भारी कमी है और कई बार मरीजों को बिना इलाज के लौटना पड़ता है। सीएमएचओ डॉ. नवीन कोठारी ने मामले को गंभीरता से लेते हुए कहा कि घटना की जांच कराई जाएगी और यदि लापरवाही पाई जाती है तो संबंधित कर्मचारियों पर कार्रवाई की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि स्वास्थ्य केंद्र में व्यवस्थाओं को सुधारने के लिए आवश्यक कदम उठाए जाएंगे ताकि भविष्य में ऐसी स्थिति दोबारा उत्पन्न न हो।

धनवंतरी नगर में युवक की संदिग्ध मौत से हड़कंप, हत्या की आशंका पर पुलिस जांच में जुटी

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

धनवंतरी नगर क्षेत्र में एक युवक का शव उसके घर के अंदर संदिग्ध परिस्थितियों में मिलने से पूरे इलाके में सनसनी फैल गई है। घटना के बाद से क्षेत्र में दहशत और तरह-तरह की चर्चाओं का माहौल बना हुआ है। प्रारंभिक तौर पर मामला हत्या का प्रतीत होने की आशंका जताई जा रही है, हालांकि पुलिस ने सभी पहलुओं को ध्यान में रखते हुए जांच शुरू कर दी है। सूचना मिलने पर धनवंतरी नगर पुलिस मौके पर पहुंची और घटनास्थल को सुरक्षित कर लिया। पुलिस ने शव का पंचनामा तैयार कर उसे पोस्टमार्टम के लिए भिजवा दिया है। साथ ही मौके से महत्वपूर्ण साक्ष्य एकत्र किए गए हैं ताकि घटना की वास्तविकता का पता लगाया जा सके। पुलिस के अनुसार मृतक की पहचान श्यामनगर निवासी सुरेंद्र कुमार (उम्र 28 वर्ष) के रूप में हुई है। उसका शव उसके ही घर में संदिग्ध अवस्था में मिला, जिससे मामले की गंभीरता और बढ़ गई है। प्रारंभिक जांच में यह भी देखा जा रहा है कि घटना के समय घर में कौन-कौन मौजूद था और युवक के संपर्क में कौन लोग थे। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के सही कारणों की पुष्टि हो सकेगी। फिलहाल हत्या, आत्महत्या और दुर्घटना—तीनों संभावनाओं को ध्यान में रखकर जांच की जा रही है। आसपास के लोगों और परिजनों से पूछताछ जारी है।

जमीन से शेयर बाजार तक ठगी का जाल, ऑनलाइन फ्रॉड और फर्जी सौदों से शहरवासी परेशान

त्रिपुरी टाईम्स ● जबलपुर
www.tripuritimes.com

जबलपुर में इन दिनों जमीन के सौदों से लेकर शेयर बाजार और ऑनलाइन ट्रांजेक्शन के नाम पर ठगी के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। शहर के अलग-अलग थाना क्षेत्रों में लाखों रुपये की धोखाधड़ी के प्रकरण सामने आने के बाद पुलिस और साइबर सेल अलर्ट मोड पर आ गई है। विजय नगर, घमापुर और ओमती थाना क्षेत्रों में दर्ज मामलों ने यह साफ कर दिया है कि जालसाज अब लोगों को नए-नए तरीकों से निशाना बना रहे हैं। कहीं जमीन बेचने के नाम पर फर्जी अनुबंध किए जा रहे हैं तो कहीं ऑनलाइन लिंक भेजकर बैंक खातों से रकम उड़ाई जा रही है। लगातार सामने आ रहे इन मामलों ने आम लोगों की चिंता बढ़ा दी है। विजय नगर थाना क्षेत्र में जमीन के सौदे के नाम पर तीन लाख रुपये की ठगी का मामला सामने आया है। पुलिस के अनुसार दर्शन चौक विजय नगर निवासी राकेश राय ने शिकायत दर्ज कराई कि उन्होंने तीन वर्ष पहले पाटन क्षेत्र स्थित एक कृषि भूमि खरीदने के लिए रमेश राजपूत, पंकज राजपूत और तरुण क्षत्रिय के साथ तीस लाख रुपये में सौदा किया था। जमीन खरीदने के लिए उन्होंने अग्रिम राशि के रूप में तीन लाख रुपये भी दिए थे। शिकायतकर्ता के मुताबिक बाद में जानकारी मिली कि जिस जमीन का सौदा किया गया था वह पहले से विवादित थी। इसके बावजूद आरोपियों ने उक्त जमीन किसी अन्य व्यक्ति अमित पटेल को बेच दी। आरोप है कि आरोपियों ने अनुबंध की शर्तों का उल्लंघन करते हुए रकम हड़प ली। मामले की शिकायत मिलने पर विजय

नगर पुलिस ने धोखाधड़ी का प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। इसी तरह घमापुर थाना क्षेत्र में एक महिला शिक्षिका साइबर ठगी का शिकार हो गईं। महिला के मोबाइल पर एक अज्ञात व्यक्ति का फोन आया। कॉल करने वाले ने कहा कि उनके खाते में पैसा आने वाला है और इसके लिए एक लिंक भेजा जा रहा है। आरोपी ने महिला को लिंक खोलने के लिए कहा। जैसे ही महिला ने लिंक को टच किया, उनका मोबाइल फोन बंद हो गया। कुछ देर बाद जब फोन चालू किया गया तो उनके यूनियन बैंक खाते से एक लाख साठ हजार रुपये निकल चुके थे। बैंक से जानकारी लेने पर पता चला कि महिला साइबर ठगी का शिकार हो गई हैं। पीड़िता ने घमापुर थाने में शिकायत दर्ज कराई है, जिसके बाद साइबर सेल मामले की जांच में जुट गई है। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि साइबर अपराधी लगातार नए तरीके अपनाकर लोगों को जाल में फंसा रहे हैं। मोबाइल लिंक, केवाईसी अपडेट, इनाम राशि, निवेश योजना और बैंक खाते में पैसा आने जैसी बातों का लालच देकर लोगों से जानकारी हासिल की जा रही है। कई मामलों में लोग बिना जांच-पड़ताल किए जमीन के सौदे कर लेते हैं, जिसका फायदा जालसाज उठाते हैं। पुलिस ने नागरिकों से अपील की है कि किसी भी अनजान व्यक्ति के फोन, लिंक या संदेश पर भरोसा न करें। बैंक खाते से संबंधित जानकारी, ओटीपी या पासवर्ड किसी के साथ साझा न करें। जमीन खरीदने से पहले दस्तावेजों की पूरी जांच कराएं और अधिकृत वकील या राजस्व अधिकारियों से सत्यापन अवश्य कराएं। पुलिस का कहना है कि ऐसे मामलों में संलिप्त गिरोहों की पहचान की जा रही है और जल्द ही आरोपियों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक डॉ. राजेश जायसवाल के लिए, मां रेवा पब्लिकेशन जबलपुर 68/1 लक्ष्मीपुर विवेकानंद वार्ड मुस्कान प्लाजा के पीछे एम.आर.-4 रोड उखरी जबलपुर (म.प्र.) से मुद्रित और कल्चुरी भवन हाउस नं. 3367/1, विवेक नगर, आधारताल, जबलपुर (म.प्र.) से प्रकाशित ।
संपादक : डॉ.राजेश जायसवाल* सभी विवादों का न्याय क्षेत्र जबलपुर रहेगा *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के जिम्मेदार। आरएनआई नं. MPHIN/2014/60079 मो. 9425154229, फोन-0761-4085321 e-mail: tripuritimes@gmail.com